10th ANNIVERSARY CELEBRATIONS ANNIVERSARY

त्रिपुरी टाइम्स

www.tripuritimes.com

वर्ष 10 अंक 6 | जबलपुर, शनिवार 1 फरवरी 2025 | पृष्ठ संख्या : 8 | मूल्य : 2 रुपए

tripuritimes@gmail.com

पहला संसदीय सत्र है जिसके पहले कोई विदेशी चिन्गारी नहीं उठीः मोदी

नई दिल्ली, एजेंसी। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने संसद के बजट सत्र के पहले विपक्ष के हंगामे का बहाना बनने वाली किसी विदेशी रिपोर्ट के नहीं आने पर राहत की सांस लेते हुए आज कहा कि 2014 के बाद से संसद का यह पहला सत्र है जिसमें जिसके एक-दो दिन पहले कोई ह्यविदेशी चिन्गारीह्न नहीं पकड़ी है, विदेश में से ह्यआग लगानेह्न की कोशिश नहीं हुई है। श्री मोदी ने संसद के बजट सत्र की शुरूआत होने के ठीक पहले हंस द्वार पर संवाददाताओं को संबोधित करते हुए यह बात कही। श्री मोदी ने गुप्त नवरात्रि की द्वितीया तिथि पर शुरू हो रहे बजट सत्र के पहले देवी लक्ष्मी की प्रार्थना की और गरीब एवं मध्यम वर्ग पर मां लक्ष्मी की कृपा होने की कामना की तथा नारी शक्ति के सशक्तीकरण के लिए इस सत्र में कई महत्वपूर्ण फैसले लिए जाने की भी बात कही। श्री मोदी ने कहा, आज बजट सत्र के प्रारंभ मैं समृद्धि की देवी मां लक्ष्मी को प्रणाम करता हूं। और ऐसे अवसर पर सदियों से हमारे यहां मां लक्ष्मी का पुण्य स्मरण किया जाता है- सिद्धिबुद्धिप्रदे देवि

भुक्तिमुक्तिप्रदायिनि। मंत्रपूते सदा देवि महालक्ष्मि नमोस्तुते। मां लक्ष्मी हमें सिद्धि और विवेक देती हैं, समृद्धि और कल्याण भी देती हैं। मैं मां लक्ष्मी से प्रार्थना करता हूं कि देश के हर गरीब एवं मध्यम वर्ग समुदाय पर मां लक्ष्मी की विशेष कृपा रहे। उन्होंने भारतीय गणतंत्र के 75 वर्ष पूरे होने को हर देशवासी के लिए सर्वाधिक गौरवपूर्ण क्षण बताया और कहा कि विश्व के लोकतांत्रिक जगत के लिए भी भारत का ये सामर्थ्य अपनी एक विशेष स्थान बनता है। उन्होंने कहा, ये देश की जनता ने मुझे तीसरी बार ये दायित्व दिया है, और इस तीसरे कार्यकाल का ये पहला पूर्ण बजट है, और मैं विश्वास से कह सकता हूं कि 2047 जब आजादी के 100 साल होंगे, विकसित भारत का जो संकल्प देश ने लिया है, ये बजट सत्र, ये बजट एक नया विश्वास पैदा करेगा, नई ऊर्जा देगा, कि देश जब आजादी के 100 साल मनाएगा, तब विकसित होकर रहेगा। 140 करोड़ देशवासी अपने सामूहिक प्रयास से इस संकल्प को परिपूर्ण करेंगे। उन्होंने कहा कि तीसरे कार्यकाल में हम मिशन मोड में देश को सर्वांगीण विकास की दिशा में, चाहे वो भौगोलिक रूप से हो, सामाजिक रूप से हो या आर्थिक भिन्न-भिन्न स्तर के संदर्भ में हो। हम सर्वांगीण विकास के संकल्प को लेकर के मिशन मोड में आगे बढ़ते जा रहे हैं। नवान्वेषण, समावेशन और निवेश ये लगातार हमारे आर्थिक गतिविधि के रोडमैप का आधार रहा है। उन्होंने कहा कि इस सत्र में हमेशा की तरह कई ऐतिहासिक दिन होंगे और व्यापक मंथन के साथ राष्ट्र की ताकत बढ़ाने का काम करने वाला कानून बनेंगे। विशेषकर नारी शक्ति के गौरव को पुनः प्रस्थापित करना, पंथ संप्रदाय के भेद से मुक्त होकर के हर नारी को सम्मानपूर्ण जीवन मिले, उसको भी समान अधिकार मिले, उस दिशा में ये सत्र में कई महत्वपूर्ण निर्णय लिए जाएंगे। सुधार, प्रदर्शन एवं परिवर्तन, जब विकास की तेज गति को प्राप्त करना होता है, तो सबसे ज्यादा बल सुधार पर रहता है, राज्य और केंद्र सरकार ने मिलकर के प्रदर्शन करना होता है और जनभागीदारी से हम परिवर्तन देख सकते हैं।

वित्त वर्ष 2025-26 में आर्थिक वृद्धि 6.3-6.8 प्रतिशत के बीच रहने का अनुमानः आर्थिक सर्वेक्षण

नई दिल्ली, एजेंसी। सरकार की ओर से शुक्रवार को संसद में पेश वित्त वर्ष 2024-25 के आर्थिक सर्वे में अगले वित्त वर्ष 2025-26 के दौरान भारत के सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) में 6.3 प्रतिशत से 6.8 प्रतिशत के बीच वृद्धि होने का अनुमान लगाया गया है। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण द्वारा लोकसभा के सदन पटल पर प्रस्तुत आर्थिक सर्वे 2024-25 में कहा गया है कि प्रमुख बुनियादी ढांचा क्षेत्रों पर केंद्र सरकार द्वारा पूंजीगत व्यय वित्त वर्ष 2019-20 से वित्त वर्ष 2023-24 के बीच 38.8 प्रतिशत बढ़ा। सर्वेक्षण के अनुसार, निर्माण क्षेत्र वित्त वर्ष 2020-21 के मध्य से गति पकड़ रहा है और इस समय महामारी-पूर्व की तुलना में लगभग 15 प्रतिशत ऊपर है। सर्वेक्षण में कहा गया है कि यह मजबूत बुनियादी ढांचे के विकास और आवास की मांग से प्रेरित एक प्रभावशाली उपलब्धि है। सर्वेक्षण के अनुसार भारत के सेवा व्यापार अधिशेष ने समग्र व्यापार संतुलन को स्थिरता प्रदान की है। देश का मजबूत सेवा क्षेत्र वैश्विक सेवा निर्यात में भारत को सातवां सबसे बड़ा सेवा निर्यातक बनने की दिशा में प्रेरित किया है, जो इस महत्वपूर्ण क्षेत्र में भारत के सेवा उद्योग की प्रतिस्पर्धात्मकता को रेखांकित करता है।

फिरोजपुर में ट्रक-पिकअप वाहन टक्कर में नौ लोगों की मौत, कई घायल

नई दिल्ली, एजेंसी। पंजाब के फिरोजपुर में शुक्रवार सुबह गुरुहरसहाय- फिरोजपुर मार्ग पर गोलू का मोड़ के नजदीक एक पिकअप वाहन और सड़क के बीच खड़े ट्रक में टक्कर होने से कम से कम नौ लोगों की मौत हो गई और 15 अन्य गंभीर रूप से घायल हो गए। पुलिस के मुताबिक पिकअप ट्रक में करीब 25 से 30 लोग सवार थे। पिकअप में सवार लोग वेटर बताए जा रहे हैं और एक शादी समारोह में जा रहे थे। तभी गुरु हर सहाय विधानसभा क्षेत्र के गोलू का मोड़ के पास यह दुर्घटना हुई। पुलिस ने बताया कि ट्रक सड़क के बीच में खड़ा था। दुर्घटना इतनी भीषण थी कि नौ लोगों की मौके पर ही मौत हो गई। दुर्घटना के बाद घटनास्थल पर अफरा-तफरी मच गई। स्थानीय लोग और पुलिस तुरंत मौके पर पहुंचे और राहत कार्य शुरू किया। दुर्घटना में घायल हुए लोगों को नजदीकी अस्पताल में भर्ती कराया गया है, जहां कई की हालत गंभीर बताई जा रही है। पुलिस ने मृतकों के शवों को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है और दुर्घटना की जांच शुरू कर दी है।

महाकुंभ में स्नानार्थियों का उत्साह चरम पर, पवित्र डुबकी लगाने वालों की संख्या तीस करोड़ के करीब

नई दिल्ली, एजेंसी। महाकुंभ के मौके पर पतित पाविनी गंगा,यमुना और अदृश्य सरस्वती के संगम पर पुण्य की डुबकी लगाने वाले श्रद्धालुओं के उत्साह में कोई कमी नहीं आयी है। त्रिवेणी के तट पर श्रद्धालुओं का सैलाब आस्था के समंदर में घुलता मिलता नजर आ रहा है। सफर की दुश्वारियों और पैदल चलने से हुयी थकान को मां गंगा अपने आंचल में समा कर मिनटों में समाप्त कर रही हैं और यह पावन डुबकी लगाकर वापस घर लौट रहे श्रद्धालुओं के चेहरे पर साफ नजर आ रहा है। शुक्रवार भोर से सुबह दस बजे तक दस लाख कल्पवासियों समेत 56 लाख 72 हजार श्रद्धालु त्रिवेणी में पवित्र स्नान कर चुके थे जिन्हे मिला कर महाकुंभ में अब तक स्नान करने वालों की संख्या बढ़ कर 29 करोड़ 64 लाख हो चुकी है। इस बीच प्रयागराज जिला प्रशासन ने साफ किया है कि मेला क्षेत्र को छोड़ कर प्रयागराज में वाहनो के प्रवेश पर फिलहाल कोई प्रतिबंध नहीं है। जिलाधिकारी रवींद्र कुमार मांदड़ ने कहा कि प्रयागराज कमिश्नरेट से डायवर्जन स्कीम (वाहनों के प्रवेश और निकास) हटाई जा रही है। इससे पहले गुरुवार की सुबह मेला क्षेत्र में गाड़ियों की एंट्री पर रोक लगा दी गई थी। उन्होंने कहा, सोशल मीडिया पर एक सूचना तेजी से वायरल हो रहा है कि चार फरवरी तक प्रयागराज में वाहनों का प्रवेश प्रतिबंधित रहेगा। यह समाचार पूरी तरह से निराधार है। प्रयागराज में वाहनों का प्रवेश (डायवर्जन स्कीम) मौनी अमावस्या को देखते हुए प्रतिबंधित किया गया था जिसे 30 तारीख से हटाया जा रहा है। 31 जनवरी,एक फरवरी और चार फरवरी को प्रयागराज में वाहनो का प्रवेश सुचारु रहेगा जबकि बसंत पंचमी स्नान पर्व के मद्देनजर दो और तीन फरवरी को नगर में वाहनों पर प्रवेश निषेध रहेगा। जहां तक मेला क्षेत्र की बात है तो इसके लिये मेला प्रशासन द्वारा दिये गये निर्देश मान्य होंगे।

एकतरफा प्यार में पागल प्रेमी ने शिक्षिका पर पेट्रोल डालकर जिंदा जलाया, मौत

नई दिल्ली, एजेंसी। यूपी के प्रतापगढ़ जिले में दिल दहला देने वाली घटना सामने आई है। यहां एक प्राइवेट स्कूल की शिक्षिका को सिरफिरे प्रेमी ने रास्ते में पेट्रोल डालकर शिक्षिका को जिंदा जला दिया। इस घटना में शिक्षिका की मौत हो गई। वहीं आरोपी विकास यादव भी बुरी तरह झुलस गया है उसे अस्पताल में भर्ती कराया गया है। पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। जानकारी के मुताबिक प्रतापगढ़ के कोहड़ौर थाना के लौली गांव में बीते दिन यहां एक सिरफिरे प्रेमी ने प्राइवेट स्कूल की शिक्षिका जो स्कूल जा रही थी को जबरन रास्ते में रोक लिया। फिर बहस के बाद उसपर पेट्रोल डालकर आग लगा दी जिससे वह जिंदा जला गई। घटना में युवती की गेहूं के खेत में दर्दनाक मौत हो गई, जबकि आरोपी भी गंभीर रूप से झुलस गया है। बताया जा रहा है कि मृतका की 2 मार्च को शादी होने वाली थी, लेकिन शादी से पहले इस घटना ने उसके परिवार के सपनों को चकनाचूर कर दिया। परिजनों ने आरोपी के खिलाफ सख्त एक्शन लेने की मांग की है। उधर, वारदात की सूचना मिलते ही सीओ सिटी के नेतृत्व में एसओजी और फील्ड यूनिट टीम मौके पर पहुंची। पुलिस ने घटनास्थल से सबूत इकटठे कर मामले की जांच शुरू कर दी है। मृतका और आरोपी दोनों एक ही बिरादरी से हैं। आरोपी प्रेमी विकास यादव को गंभीर हालत में अस्पताल में भर्ती कराया गया है। शुरूआती जांच से पता चला है कि एकतरफा प्यार में आरोपी ने जघन्य अपराध को अंजाम दिया है। फिलहाल पुलिस मामले की गहन जांच कर रही है।

बैंक लूट में गड़बड़ी करने वाले 13 पुलिसकर्मी लाइन हाजिर, सोना बरामदी को लेकर भूमिका संदिग्ध

नई दिल्ली, एजेंसी। चिनहट में इंडियन ओवरसीज बैंक का लॉकर काटकर करोड़ों की चोरी के मामले में 13 पुलिसकर्मियों को लाइन हाजिर कर दिया है। एडीसीपी के मुताबिक, विशेष दस्ते में शामिल पुलिसकर्मियों को बयान दर्ज कराने के लिए नोटिस दिया गया है। बरामदगी के बाद छुट्टी पर गए दरोगा सतीश, सिपाही हितेश और अजय से पूरे प्रकरण के बारे में पता लगाएंगे। चिनहट में इंडियन ओवरसीज बैंक के 42 लॉकर काटकर करोड़ों की चोरी के मामले में पुलिसकर्मियों का खेल उजागर हुआ है। डीसीपी पूर्वी शशांक सिंह ने पूरी स्वॉट टीम को भंग कर दिया है। सभी 13 पुलिसकर्मियों का अलग-अलग ट्रांसफर किया गया है। सूत्रों का कहना है कि बदमाशों से जेवर बरामद करने के बाद कुछ पुलिसकर्मियों ने लाखों का सोना पार कर दिया था। इनमें दरोगा समेत तीन पुलिसकर्मी ऐसे हैं, तो खुलासे के अगले ही दिन छुट्टी पर चले गए थे। डीसीपी पूर्वी के मुताबिक लंबे समय से स्वॉट टीम में तैनात पुलिसकर्मियों को हटाया गया है। सर्विलांस सेल और स्वॉट टीम को जनहित में तत्काल प्रभाव से भंग किया गया है। इनके खिलाफ शिकायतें आ रही थीं। मामले की जांच एडीसीपी पूर्वी को सौंपी गई है। सोना चोरी का मामला मेरे संज्ञान में नहीं है। जांच रिपोर्ट के आधार पर आगे की कार्रवाई की जाएगी। सूत्रों का कहना है कि लॉकर काटकर चोरी के बाद स्वॉट टीम में तैनात दरोगा सतीश कुमार, सिपाही अजय कुमार, मनोज कुमार सिंह और हितेश सिंह दबिश के लिए गाजीपुर जिले में गए थे। इन लोगों ने कार बाजार से एक गाड़ी ली थी। चारों ने गाजीपुर जाकर बदमाशों से सात बैग जेवर बरामद किए। वहीं, गाजीपुर पुलिस ने दो बैग जेवर बरामद किया। चारों पुलिसकर्मी बरामदगी के बाद लखनऊ लौट आए। इसके बाद दरोगा सतीश, सिपाही हितेश और अजय छुट्टी पर चले गए थे।सूत्रों का कहना है कि जिन लोगों को विशेष दस्ते से हटाया गया है, उनमें कुछ ऐसे भी हैं, जिनकी कोई भूमिका नहीं है। पुलिस गिरफ्तार बदमाशों से भी पूछताछ करेगी। पता लगाया जाएगा कि आरोपियों के पास से कुल कितना जेवर बरामद किया गया था। विशेष दस्ते में शामिल दरोगा सतीश कुमार, रंजीत कुमार, अनुज सिंह, हेड कांस्टेबल हरि किशोर, परशुराम राय, कांस्टेबल हितेश सिंह, राहुल पांडेय, विशाल कुमार, सचिन तोमर, विमल चंद्र पाल, अजय कुमार और महिला सिपाही शिल्पी पांडेय को लाइन हाजिर कर दिया गया है। एक सिपाही बुधवार को ही लाइन हाजिर किया गया था। इस प्रकरण के मास्टर माइंड गाजीपुर जेल में बंद विपिन से गोमतीनगर पुलिस पूछताछ करेगी।

कोर्ट ने गुस्से में पूछा- मूर्तियां बनाने के लिए पीओपी का क्यों हो रहा इस्तेमाल

नई दिल्ली, एजेंसी। बॉम्बे उच्च न्यायालय ने मूर्ति निमार्ताओं से यह भी पूछा कि अदालत के बार-बार दिए गए आदेश के बावजूद उन्होंने देवी-देवताओं की मूर्तियां बनाने के लिए पीओपी का उपयोग क्यों जारी रखा है। सीपीसीबी ने 12 मई, 2020 को संशोधित दिशानिर्देश जारी किए थे, जिसमें पीओपी से बनी मूर्तियों के निर्माण, बिक्री और विसर्जन पर प्रतिबंध लगा दिया गया था। पीओपी एक सफेद पाउडर है जो पानी में मिलाने पर सख्त हो जाता है। बोर्ड ने मूर्तियां बनाने के लिए पर्यावरण के अनुकूल कच्चे माल के उपयोग को प्रोत्साहित किया है। कोर्ट ने गुरुवार को केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के उन दिशानिर्देशों का सख्ती से पालन करने का निर्देश दिया, जिसमें प्लास्टर ऑफ पेरिस से बनी मूर्तियों के जलाशयों में विसर्जन पर प्रतिबंध लगाया गया है। मुख्य न्यायाधीश आलोक अराधे और न्यायमूर्ति भारती डांगरे की खंडपीठ ने एक जनहित याचिका पर सुनवाई की। उसने बृह्नमुंबई महानगर पालिका (बीएमसी) और महाराष्ट्र के अन्य सभी नगर निगमों को निर्देश दिया कि वे 1 और 2 फरवरी को मनाए जाने वाले ह्यमाघी

गणेश उत्सव से पहले दिशानिदेर्शों का पालन सुनिश्चित करें। अदालत ठाणे निवासी रोहित जोशी और मिट्टी से मूर्तियां बनाने वाले 9 कारीगरों सहित अन्य की ओर से दायर एक जनहित याचिका पर सुनवाई कर रही थी, जिसमें सीपीसीबी के 2020 के दिशानिर्देशों के सख्त पालन का अनुरोध किया गया है। दूसरी ओर, पंजाब में जालंधर के डिप्टी कमिश्नर-कम-डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट डॉ. हिमांशु अग्रवाल ने जिला पुलिस को जालंधर जिले में स्थापित बाबा साहेब डॉ. भीमराव आंबेडकर की मूर्तियों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के निर्देश दिए हैं।

संजय बोले- उद्धव की पार्टी से गठबंधन चाहती है भाजपा, फडणवीस ने दिखा दिया आईना

नई दिल्ली, एजेंसी। शिवसेना (उद्धव बालासाहेब ठाकरे) नेता संजय राउत ने दावा किया कि सत्तारूढ़ भाजपा के कई नेता उद्धव ठाकरे के नेतृत्व वाली पार्टी के साथ गठबंधन करना चाहते हैं। राउत ने कहा कि हालांकि शिवसेना (यूबीटी) के भीतर ऐसी कोई चर्चा नहीं हुई है, लेकिन पार्टी के कुछ सदस्य भी ऐसी ही भावनाएं रख सकते हैं। हालांकि, मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने इन दावों को न केवल खारिज किया बल्कि आईना भी दिखा दिया। दिल्ली में पत्रकारों के एक सवाल पर फडणवीस ने कहा कि सामान्य बैठकों को राजनीतिक रूप से नहीं देखा जाना चाहिए। राउत के दावों को खारिज करते हुए फडणवीस ने कहा, किसी को भी इतना भोला नहीं होना चाहिए... लोग प्रीतिभोज में मिलें और गठबंधन बन जाए या दल करीब आ जाएं। यह पूछे जाने पर कि क्या शिवसेना (उबाठा) के नेता भी भाजपा के साथ गठबंधन करने की यही भावना रखते हैं, राउत ने कहा, हो सकता है। हम भाजपा के कुछ नेताओं की वजह से एमवीए के साथ गए। आपने हमारी पार्टी को विभाजित कर दिया और एकनाथ शिंदे को वह दे दिया जिसकी हम मांग कर रहे थे। उन्होंने कहा, हमने पहले भी कई बार इस तरह की चर्चा की है। हालांकि शिवसेना (उबाठा) में अभी तक ऐसी कोई बातचीत नहीं हुई है। इस तरह की बयानबाजी उस वक्त शुरू हुई जब ठाकरे के सहयोगी और विधान परिषद सदस्य मिलिंद नार्वेकर एवं भाजपा के मंत्री चंद्रकांत पाटिल के बीच बुधवार रात विधायक पराग अलवानी की बेटी के विवाह समारोह में शिवसेना प्रमुख की मौजूदगी में हुई कुछ हंसी-मजाक वाली बातचीत के बाद आई है। भाजपा के अलवानी मुंबई के उपनगरीय क्षेत्र विले पार्ले से तीन बार विधायक रह चुके हैं। भाजपा के एक पदाधिकारी ने बताया कि ठाकरे के अलवानी के साथ अच्छे संबंध हैं। राउत ने कहा कि भाजपा में कई लोग पाटिल की स्वर्णिम क्षण वाली भावनाओं को साझा करते हैं। उन्होंने कहा, मुझे संदेह है कि एकनाथ शिंदे की शिवसेना कितने समय तक भाजपा के साथ रहेगी।

केजरीवाल ने चुनाव आयोग से मिलकर दिया जवाब

नई दिल्ली, एजेंसी। आम आदमी पार्टी (आप) के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल ने शुक्रवार को चुनाव आयोग के समक्ष यमुना के पानी में जहर के मामले में जवाब दिया। चुनाव आयोग ने कहा कि आयोग ने आज बहुत ही कम समय के नोटिस पर आप नेता श्री केजरीवाल को धैर्यपूर्वक सुना और उनका जवाब प्राप्त किया। आयोग के सभी सदस्यों ने, व्यक्तिगत आक्षेपों और आक्रामक रणनीति से प्रभावित हुए बिना, उत्तर की विस्तार से जांच करने और योग्यता के आधार पर निर्णय लेने का फैसला लिया। श्री केजरीवाल ने चुनाव आयोग को सौंपें जवाब में कहा कि अगर आयोग ने हरियाणा सरकार और भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के नेताओं पर यमुना को लेकर कार्रवाई नहीं कि तो ये माना जाएगा कि चुनाव आयोग जनता के हित के बजाए सत्ताधारी दल के हित में काम कर रही है। उन्होंने कहा कि इस मुद्दे पर चुप नहीं बैठा जा सकता है। मेरे ऊपर जो भी अवैध कार्रवाई भाजपा के इशारे पर होती है तो मैं इसे स्वागत करता हूं। आप नेता ने छह पेज के जवाब में चुनाव आयोग पर गंभीर आरोप लगाए हैं। उन्होंने जवाब में दिल्ली जल बोर्ड की मुख्य कार्यकारी अधिकारी (सीईओ) की ओर से दिल्ली के मुख्य सचिव को लिखी चिट्ठी का हवाला दिया है,

जिसमें यमुना नदी में अमोनिया की बात कही गई थी। उन्होंने आयोग के पांच सवालों के जवाब दिये। आयोग ने पूछा कि यमुना के पानी में किस प्रकार का जहर मिला था केजरीवाल ने दिया जवाब- अमोनिया। यमुना के जल में जहर मिला है, इसका आपके पास सबूत क्या है केजरीवाल ने अपने जवाब में कहा कि 27 जनवरी को दिल्ली जल बोर्ड के सीईओ का पत्र, जिसमें बताया गया है कि जल में अमोनिया की मात्रा कितनी है। इसी प्रकार यमुना नदी में किस जगह जहरीला पानी है इस पर केजरीवाल ने जवाब में कहा कि 27 जनवरी की दिल्ली जल बोर्ड के सीईओ का पत्र में है। आयोग ने पूछा किस अधिकारी ने यमुना के जल में जहर पकड़ा है इस पर श्री केजरीवाल ने जवाब दिया कि जल बोर्ड सीईओ और अन्य अधिकारियों ने इसे जांच में पकड़ा।

सीएम जापान के क्योटो पहुंचे जीटूजी और बीटूबी बैठकें करेंगे

कहा– बांग्लादेश में आए बदलाव के बाद एमपी में रेडीमेड सेक्टर में निवेश की संभावना बढ़ी

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि बांग्लादेश में आए बदलाव के बाद एमपी में रेडीमेड सेक्टर में निवेश की काफी संभावनाएं बढ़ी हैं। एमपी की निवेश नीति उद्योगों के अनुकूल है और इसके लिए निवेशकों की जरूरत के आधार पर सरकार कैबिनेट के माध्यम से समय समय पर नीतियों में बदलाव भी करती है। एमपी में स्पेस टेक्नालॉजी, माइनिंग, एमएसएमई, हैवी इंडस्ट्री सभी के लिए पर्याप्त संसाधन और मौके उपलब्ध हैं। जापान यात्रा के दौरान सीएम यादव ने ये बातें स्थानीय मीडिया से चर्चा में कहीं। सीएम यादव जापान यात्रा के चौथे दिन आज गवर्नमेंट-टू-गवर्नमेंट और बिजनेस-टू-बिजनेस बैठकों में शामिल होंगे। इन बैठकों में राज्य के औद्योगिक विकास और जापान के साथ व्यापारिक संबंधों को मजबूत बनाने के लिए चर्चा होगी। मुख्यमंत्री डॉ. यादव जापान के उच्च अधिकारियों और प्रमुख उद्योगपतियों से मिलकर मध्यप्रदेश में निवेश और प्रौद्योगिकी हस्तांतरण के विभिन्न पहलुओं पर विचार-विमर्श करेंगे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव क्योटो में व्यापारिक प्रतिनिधियों और उद्योगपतियों के साथ चर्चा करेंगे। इस दौरान राज्य के विभिन्न उद्योगों, जैसे आईटी, मैन्युफैक्चरिंग और पर्यटन पर चर्चा की जाएगी जिससे इन क्षेत्रों में जापान के अनुभव का लाभ लिया जा सके। जापान की संस्कृति में भारतीयता की छाप मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने जापान प्रवास के चौथे दिन क्योटो के ऐतिहासिक और दार्शनिक स्थलों का भ्रमण किया। उन्होंने भारतीय संस्कृति और बौद्ध परंपराओं से जुड़े स्थलों को देखा। एक्स पर सीएम यादव ने लिखा कि क्योटो में भारतीय दर्शन की झलक स्पष्ट दिखती है। उन्होंने आज जापान यात्रा के चौथे दिन का शुभारंभ क्योटो स्थित प्राचीन बौद्ध Sanjusangendo मंदिर के भ्रमण से किया। जापान की संस्कृति में भारतीयता निहित है। क्योटो स्थित प्राचीन मंदिर की अद्भुत स्थापत्य कला और समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को देखकर मन आनंदित हो गया। यह सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक स्थल जापान की भव्यता और समृद्धि को दशार्ता है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने जापान में ऐतिहासिक टेम्पल्स और कैसल का किया भ्रमण

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने जापान दौरे के चौथे दिन क्योटो में ऐतिहासिक स्थलों का भ्रमण किया। उन्होंने सांस्कृतिक विरासत को समझने और मध्यप्रदेश के साथ संभावित सहयोग के नए अवसरों पर विचार-विमर्श के उद्देश्य से प्रसिद्ध निजो-जो कैसल, शेंजुशेंगेन्डो और टोजी टेम्पल का भ्रमण कर दर्शन किये। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने क्योटो स्थित निजो-जो कैसल का अवलोकन किया, जो जापान की समृद्ध ऐतिहासिक धरोहर और स्थापत्य कला का प्रतीक है। उन्होंने इस दौरान जापान की सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण और उसके प्रबंधन से जुड़े पहलुओं को भी जाना। इसके साथ ही, उन्होंने शेंजुशेंगेन्डो मंदिर में दर्शन किए, जो अपनी अनूठी वास्तुकला और ऐतिहासिक महत्व के लिए प्रसिद्ध है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि जापान और मध्यप्रदेश के बीच सांस्कृतिक और औद्योगिक संबंध पहले से ही सुदृढ़ हैं इन्हें और अधिक प्रगाढ़ करने के लिए विभिन्न क्षेत्रों में सहयोग के नए आयाम तलाशे जा रहे हैं, जिससे पर्यटन और सांस्कृतिक आदान-प्रदान को बढ़ावा मिल सके।

भोपाल में नशे में युवक टावर पर चढ़ा:जमकर किया हाई वोल्टेज ड्रामा

पुलिस-एसडीआरएफ ने उतारा

भोपाल। भोपाल के बरखेड़ी इलाके में विवेक ठाकुर (33) नामक युवक नशे की हालत में मोबाइल टावर पर चढ़ गया, यह घटना दोपहर करीब 2 बजे की है। युवक को टावर पर चढ़ता देख स्थानीय लोगों ने तुरंत पुलिस और नगर निगम को सूचना दी। करीब 20 मिनट तक युवक टावर पर चढ़ा रहा और उसे हिलाने की कोशिश करता रहा। मौके पर नगर निगम, पुलिस और एसडीआरएफ की टीमें पहुंचीं। जहांगीराबाद थाना के एएसआई राजेंद्र यादव ने बताया कि सूचना मिलते ही पुलिस तुरंत मौके पर पहुंची, जहां भारी भीड़ जमा हो गई थी। पुलिस और बचाव दल ने युवक को बातों में उलझाकर करीब 2:40 बजे सुरक्षित नीचे उतारा। जांच में पता चला कि युवक भोपाल के ऐशबाग इलाके का रहने वाला है और नशे की हालत में टावर पर चढ़ा था। पुलिस ने युवक को हिरासत में लेकर आगे की कार्रवाई शुरू कर दी है।

भ्रष्टाचार के आरोपी सौरभ और साथी हाई सिक्योरिटी सेल में

हर 24 घंटे में मेडिकल जांच, अधिकारी खाकर चेक करने के बाद देते हैं खाना

भोपाल। आरटीओ के पूर्व कॉन्स्टेबल सौरभ शर्मा और उसके दोनों सहयोगियों शरद जायसवाल और चेतन को पुलिस रिमांड के दौरान हाई सिक्योरिटी में रखा गया है। हर 24 घंटे में तीनों का मेडिकल चेकअप कराया जा रहा है। तीनों के लिए खाना लोकायुक्त कार्यालय में बने किचन में ही तैयार कराया जाता है। इस खाने को पहले अधिकारी स्वयं खाकर चेक करते हैं। तीनों ने मंगलवार और बुधवार की रातें पुराने शहर के कोहेफिजा थाने में काटी थी। इस थाने में एक ही पुरुष बंदी बैरक है। तीनों की सुरक्षा के लिए बैरक के बाहर एक-चार का गार्ड तैनात किया गया है। यह तैनाती लोकायुक्त की ओर से कराई गई है। थाने के रोजनामचे में बाकायदा तीनों की आमद दर्ज की गई है। थाने के बाहर भी लोकायुक्त की ओर से रिजर्व लाइन का पुलिस बल तैनात कराया जा रहा है। बाहरी सुरक्षा में चार जवान तैनात रहते हैं। थाने के स्टाफ को तीनों से बातचीत की इजाजत नहीं होती है।

विवेचक, अधिकारियों और 3 डीएसपी के अलावा किसी को एंट्री नहीं : जिस प्रथम तल पर तीनों आरोपियों से अलग-अलग कमरे में पूछताछ की जा रही है, वहां भी अलग से सुरक्षा के इंतजाम किए गए हैं। सख्त सुरक्षा व्यवस्था के चलते केस के विवेचक और कार्यालय के दो आला अधिकारियों और उस फ्लोर पर मौजूद तीन डीएसपी रैंक के अधिकारियों को छोड़कर किसी भी अन्य अधिकारी-कर्मचारी को इस फ्लोर पर जाने की इजाजत नहीं है। अगर यहां जाना भी हो तो अधिकारियों की अनुमति आवश्यक कर दी गई है।

ब्रेकफास्ट से लेकर लंच और डिनर तक का मेन्यू फिक्स : हिरासत में रहने के दौरान फूड पाइजनिंग और अन्य बीमारियों के मद्देनजर तीनों आरोपियों का ब्रेक फास्ट से लेकर लंच और डिनर तक का मेन्यू फिक्स कर दिया गया है। यह मेन्यू एक डीएसपी स्तर के अधिकारी तय करते हैं। सुबह के नाश्ते में पहले दिन चाय के साथ पोहा, दूसरे दिन उपमा दिया गया। दोपहर के खाने में एक सीजनल सब्जी, चार रोटी और दाल के साथ स्टीम राइस दिए जा रहे हैं। दाल भी लंच और डिनर में अलग-अलग तरह की दी जा रही है। इस खाने को टेस्ट करने के बाद तीनों आरोपियों तक पहुंचाया जाता है।

पीएम एक्सीलेंस अवार्ड के लिए कलेक्टर करेंगे दावेदारी

14 फरवरी तक कर सकेंगे नॉमिनेशन, तीन कैटेगरी में मिलेंगे 16 अवार्ड

भोपाल। केंद्र सरकार ने प्रदेश के सभी जिलों के कलेक्टर और अन्य लोकसेवकों से पीएम एक्सीलेंस अवॉर्ड के लिए आवेदन आमंत्रित किए हैं। यह अवॉर्ड तीन कैटेगरी में दिए जाएंगे और कुल 16 अवॉर्ड्स दिए जाएंगे। आवेदन की अंतिम तिथि 14 फरवरी रखी गई है। कलेक्टर और अन्य अधिकारी इस अवॉर्ड के लिए अपने नवाचार के साथ-साथ केंद्र सरकार की 11 अलग-अलग योजनाओं में किए गए बेस्ट परफॉर्मेंस के बारे में जानकारी देंगे। पीएम सूर्य घर मुफ्त बिजली योजना के अंतर्गत पांच बेस्ट परफॉर्मिंग जिलों को चुना जाएगा। इसके लिए 1 अप्रैल 2022 से 31 दिसम्बर 2024 तक के कार्यों को स्वीकार किया जाएगा। डिपार्टमेंट ऑफ एडमिनिस्ट्रेटिव रिफॉर्म्स एंड ग्रीवेंस की ओर से जारी निर्देशों में कहा गया है कि अवॉर्ड के चयन में शासकीय योजनाओं के क्रियान्वयन में जनभागीदारी को महत्वपूर्ण माना जाएगा। इसके साथ ही कार्यक्रमों के क्रियान्वयन में करप्शन कंट्रोल, क्वालिटी मेंटेनेंस, गवर्नेंस और अन्य संबंधित मापदंडों को परखा जाएगा। इस अवॉर्ड के अंतर्गत ट्रॉफी, प्रशस्ति पत्र और 20 लाख रुपए का इंसेंटिव दिया जाएगा, जो जिलों और संगठनों को प्रोजेक्ट्स और प्रोग्राम्स को और सफल बनाने के लिए मिलेगा।

11 योजनाओं पर काम करने वाले कर सकेंगे दावेदारी

हर घर जल योजना
पीएम आवास योजना (ग्रामीण)
पीएम आवास योजना (शहरी)
मिशन इंद्रधनुष
पीएम जन आरोग्य योजना (एबी पीएम-जेएवाई)
पीएम स्व-निधि
प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना
किसानों, पशुपालकों, मछुआरों के लिए किसान क्रेडिट कार्ड स्कीम
पीएम विश्वकर्मा योजना
सक्षम आंगनबाड़ी और पोषण 2.0
पीएम सूर्य घर मुफ्त बिजली योजना
5 जिलों को मिलेंगे पुरस्कार

एस्पिरेशन ब्लाक्स प्रोग्राम (आकांक्षी विकासखंड विकास कार्यक्रम) के अंतर्गत 9 जनवरी 2023 को केंद्र सरकार ने कार्य शुरू किया था। इस कार्यक्रम में 329 जिलों के 500 ब्लॉक्स में कार्य किए जा रहे हैं, जिनका उद्देश्य इन क्षेत्रों में लोगों की जीवनचर्या में बदलाव लाना और उनके जीवन स्तर को सुधारना है। इन ब्लॉक्स में शिक्षा, कृषि, स्वास्थ्य, पोषण, सोशल डेवलपमेंट और बेसिक इन्फ्रास्ट्रक्चर पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है।

कार्यक्रम के अंतर्गत किए जा रहे कार्यों के आधार पर विकासखंडों की रैंकिंग की जा रही है। इसके अलावा, बेस्ट परफॉर्मिंग एस्पिरेशन ब्लॉक्स के लिए 5 अवॉर्ड दिए जाएंगे, जिनका चयन विकासखंडों के कार्यों के प्रदर्शन को देखते हुए किया जाएगा। साथ ही इनोवेशन कैटेगरी के लिए 6 अवाड्र्स भी प्रदान किए जाएंगे।

यह पुरस्कार उन विकासखंडों को दिए जाएंगे जो केंद्र सरकार की योजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन में उत्कृष्ट प्रदर्शन करेंगे और अपने इलाके में जीवन स्तर में सुधार लाने में सफल होंगे।

इनोवेशन कैटेगरी में रोल मॉडल होंगे

इनोवेशन कैटेगरी के अंतर्गत केंद्र सरकार ने यह तय किया है कि नेशनल, स्टेट और डिस्ट्रिक्ट स्तर पर अलग-अलग पुरस्कार दिए जाएंगे। निदेर्शों के अनुसार, इनोवेशन की श्रेणी में सबसे अधिक प्रविष्टियां आती हैं, जिसको देखते हुए केंद्र सरकार ने यह निर्णय लिया है कि केवल मॉडल प्रस्तावों को ही पुरस्कार के लिए चुना जाएगा। इनोवेशन कैटेगरी में शामिल किए जाने वाले सभी प्रस्तावों को रोल मॉडल के रूप में प्रस्तुत किया जाएगा, जिनका उद्देश्य दूसरों के लिए एक आदर्श बनना और अन्य क्षेत्रों में लागू किया जा सकना चाहिए। इस श्रेणी में इनोवेशन के लिए केवल प्रभावी और सृजनात्मक उपायों को ही ध्यान में रखा जाएगा, जो जनकल्याण और प्रशासन में सुधार के लिए महत्वपूर्ण हों।

कांग्रेस विधायक ने वक्फ जेपीसी के चेयरमेन को लिखा लेटर

मसूद बोले– 7 हजार वक्फ संपत्तियों का फिजिकल वेरिफिकेशन पेंडिंग, 5 दिन में कैसे होगा

भोपाल। मप्र के पिछड़ा वर्ग और अल्पसंख्यक कल्याण विभाग के अपर मुख्य सचिव अशोक बर्णवाल ने सभी कलेक्टरों और संभागायुक्तों को पत्र लिखकर पांच दिन में पूरे प्रदेश की वक्फ संपत्तियों का भौतिक सत्यापन करने का आदेश दिया है। इस आदेश को लेकर भोपाल मध्य के कांग्रेस विधायक आरिफ मसूद ने वक्फ की संयुक्त संसदीय समिति ( ) के अध्यक्ष जगदंबिका पाल को लेटर लिखा है। मसूद ने कहा मप्र में वक्फ की 15 हजार संपत्तियां हैं। जिनमें से 7 हजार का भौतिक सत्यापन होना बाकी है। ये सत्यापन करने में 6 महीने से ज्यादा का वक्त लग सकता है।

कांग्रेस विधायक का जेपीसी के चेयरमेन को लिखा लेटर...

विधायक आरिफ मसूद ने जगदंबिका पाल को लिखा- संयुक्त संसदीय समिति की दिल्ली में दिनांक 26/12/2024 को आयोजित बैठक में दिये गए निदेर्शों के क्रम में मध्यप्रदेश वक्फ बोर्ड से संबंधित वक्फ संपत्तियों की जिलेवार 15 बिंदुओं पर जानकारी चाही है। इस संबंध में मध्यप्रदेश के पिछड़ा वर्ग तथा अल्पसंख्यक कल्याण विभाग द्वारा सभी संभागायुक्त और कलेक्टरों को पत्र जारी कर वक्फ संपत्तियों का राजस्व अभिलेखों एवं मौके पर भौतिक सत्यापन कर संबंधित पोर्टल पर ऑनलाइन इंद्राज किये जाने के निर्देश दिये हैं।

5 दिनों में सत्यापन कर रिकॉर्ड कैसे दर्ज होगा : इस काम को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए 05 दिनों की समय-सीमा में पूरा कर ऑनलाइन रिकॉर्ड दर्ज करना है। जिस तरह से मध्यप्रदेश शासन अल्पसंख्यक विभाग ने वक्फ संपत्तियों के भौतिक सत्यापन के लिए 05 दिनों की अवधि तय की है। निश्चित ही इस तरह की जल्दबाजी के चलते कई वक्फ संपत्तियां ऑनलाइन इंद्राज होने से छूट जाएंगी या फिर गलत संपत्तियां दर्ज हो जाएंगी। इसकी जवाबदारी किसकी होगी ?

मध्यप्रदेश के वक्फ बोर्ड पोर्टल पर कुल 15 हजार संपत्तियां दर्ज हैं जिनमें से 08 हजार संपत्तियों का भौतिक सत्यापन हो चुका है जबकि 07 हजार संपत्तियों का भौतिक सत्यापन होना बाकी है जिसको करने में लगभग 06 माह से अधिक का समय लग सकता है। इसलिए मेरा आग्रह है कि वक्फ संपत्तियों का राजस्व अभिलेखों एवं मौके पर सत्यापन करने के लिए कम से कम 06 महीने का समय देने के लिए मध्यप्रदेश के अल्पसंख्यक विभाग को निर्देश दिए जाएं।

निजी स्कूल कर रहे मान्यता नियमों का विरोध

भोपाल। प्राइवेट स्कूल एसोसिएशन ने मान्यता में नियमों के बदलाव को लेकर 30 जनवरी को हड़ताल की, जिसका बहुत अधिक असर भोपाल में फिलहाल नहीं दिखाई दिया। मगर प्रदेश के कई जिलों में इसका असर देखने को मिला है। स्कूलों को मान्यता के लिए अप्लाई करने की आज आखरी तारीख है। प्राइवेट स्कूल एसोसिएशन के अध्यक्ष अजीत सिंह की माने तो प्रदेश भर में कुल 34 हजार स्कूल हैं। जिसमें से 8 हजार से अधिक ने मान्यता के लिए अप्लाई किया है। बाकी स्कूल अभी अप्लाई नहीं कर रहे हैं। उन्होंने सभी स्कूल संचालकों से गुजारिश की है कि वह जल्द से जल्द मान्यता के लिए अप्लाई करें। दूसरी तरफ आरएसके के डायरेक्टर हरजिंदर सिंह इस बारे में बात नहीं कर रहे हैं।

किसानों के लिए किए जा रहे नवाचार और मिल रहीं उपलब्धियाँ

भोपाल। राज्य सरकार किसानों के कल्याण के लिये कोई कसर नहीं छोड़ रही है। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में किसानों के हित में कई नवाचार किऐ जा रहे हैं और उपलब्धियाँ हासिल हो रहीं है। वर्ष 2024-25 में खाद्य एवं पोषण सुरक्षा मिशन अंतर्गत 2 लाख से अधिक किसानों को लाभांवित किया गया है। मध्यप्रदेश राज्य मिलेट मिशन अंतर्गत कृषकों को डेढ़ करोड़ रुपए से अधिक राशि का लाभ प्रदान किया गया है। वर्ष 2024-25 में राष्ट्रीय कृषि विकास योजनांतर्गत 207 करोड़ रुपए के प्रोजेक्ट एवं 644 करोड़ रुपए की वार्षिक कार्ययोजना स्वीकृत की गई है। रबी विपणन वर्ष 2023-24 में कुल 81 लाख कृषक आवेदनों का 41.49 लाख हेक्टेयर क्षेत्र के लिए बीमांकन किया गया। प्रधानमंत्री फसल बीमा योजनांतर्गत 25.79 लाख कृषकों को 755 करोड़ राशि के दावा भुगतान किये गये। किसानों को शीघ्रता से हरसंभव दावा भुगतान करने के प्रयास किये जा रहे हैं।

बीज से संबंधित एक वर्ष की उपलब्धि : खरीफ 2024 में कुल 22.87 लाख क्विंटल प्रमाणित बीज का शासकीय, सहकारी एवं पंजीकृत निजी बीज उत्पादक संस्थाओं के माध्यम से वितरण किया गया। प्रदेश के कृषकों को उच्च गुणवत्तायुक्त बीज उपलब्धता के लिये संभाग स्तर पर 10 बीज परीक्षण प्रयोगशालाएं संचालित हैं।

वर्ष 2023-24 में 21920 बीज नमूना विश्लेषण के लक्ष्य के विरुद्ध कुल 17376 बीज नमूने लिये जाकर 14085 नमूने बीज परीक्षण प्रयोगशाला में विश्लेषित किये गये। जिसमें 12955 मानक तथा 1130 अमानक पाये गये। अमानक नमूनों में 1070 विक्रय प्रतिबंधित, 186 लाइसेंस निलंबन तथा 70 लाईसेंस निरस्त किये गये। खरीफ 2024 में 13140 बीज नमूना विश्लेषण के लक्ष्य के विरूद्ध कुल 10235 नमूने लिये गये एवं 10212 विश्लेषित किये गये। जिसमें 9422 मानक तथा 790 अमानक पाये गये। अमानक नमूनों में 534 विक्रय प्रतिबंधित, 25 लाइसेंस निलंबन तथा 8 लाईसेंस निरस्त किये गये।

राष्ट्रीय मिशन ऑन ईडीबल ऑईल तिलहन : वर्ष 2024-25 में स्वीकृत कार्य योजना अनुसार 3629.05 लाख रुपए का आवंटन जिलों को जारी किया गया, जिसके विरुद्ध जिलों ?द्वारा 1991.45 लाख रुपए का व्यय किया गया है।

रेनफेड ऐरिया डेवेलपमेंट : योजनान्तर्गत वर्ष 2023-24 में 144.35 लाख रुपए व्यय किये जाकर 1392 हेक्टेयर क्षेत्र के कृषको को लाभान्वित किया गया।

सब मिशन ऑन एग्रोफारेस्ट्री योजना : सब मिशन ऑन एग्रोफारेस्ट्री योजना में वर्ष 2023-24 में 141 लाख रुपए व्यय किये जाकर 4 नर्सरियों को लाभान्वित किया गया।

बलराम तालाब : प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजनान्तर्गत बलराम तालाब योजना में कृषकों को स्वयं के व्यय पर तालाब निर्माण निर्माण पर सामान्य कृषकों को लागत राशि का 40 प्रतिशत अधिकतम राशि रु. 80 हजार रुपए, लघु सीमान्त कृषकों को लागत राशि का 50 प्रतिशत अधिकतम राशि, 80 हजार रुपए तथा अनुसूचित जाति/जनजाति के कृषकों को लागत राशि का 75 प्रतिशत अधिकतम एक लाख रुपए का अनुदान दिए जाने का प्रावधान निहित है। वर्ष 2023-24 में 569.30 लाख व्यय किये जाकर 662 बलराम तालाब निर्मित किये गये गये हैं। विभाग ?द्वारा वर्ष 2024-25 के लिये राशि रुपये 5308.34 का वित्तीय लक्ष्य एवं 6144 बलराम तालाब निर्मित किये जाने का भौतिक लक्ष्य रखा गया है।

बरगी विधानसभा क्षेत्र के वीर दुगार्दास राठौर वार्ड के नागरिकों को उद्यान की महापौर-विधायक ने दी बड़ी सौगात

महापौर श्री अन्नू ने विधायक नीरज सिंह के साथ सभी कन्याओं की विशेष उपस्थिति में किया उद्यान निर्माण का भूमिपूजन

त्रिपुरी टाईम्स • जबलपुर
www.tripuritimes.com

नगर निगम द्वारा महापौर जगत बहादुर सिंह अन्नू के निदेर्शानुसार शहर के विभिन्न क्षेत्रों में अद्योसंरचना एवं विकास के कार्य लगातार कराये जा रहे हैं। इसी विकास कार्यो की श्रृंखला में आज बरगी विधानसभा क्षेत्र संभाग क्रमांक 1 गढ़ा के वीर दुगार्दास राठौर वार्ड मॉं त्रिपुरा सुन्दरी मंदिर तेवर के समीप सड़क किनारे लगभग 43 लाख रुपए की लागत से उद्यान निर्माण के कार्य का शुभारंभ स्थानीय स्कूल के कन्याओं से महापौर जगत बहादुर सिंह अन्नू, बरगी विधानसभा क्षेत्र के विधायक नीरज सिंह, एम.आई.सी. सदस्य एवं लोकनिर्माण तथा उद्यान विभाग, योजना एवं सूचना प्रौद्योगिकी विभाग प्रभारी विवेक राम सोनकर, पार्षद श्रीमती ज्योति विनोद लोधी, विधायक प्रतिनिधि राजकुमार पटैल आदि ने कन्याओं का पूजन कर कार्य का शुभारंभ किया। इस अवसर पर महापौर जगत बहादुर सिंह अन्नू और बरगी विधानसभा क्षेत्र के विधायक नीरज सिंह ने कहा कि आज का भूमिपूजन समारोह क्षेत्रीय नागरिकों के लिए विकास का दिन है एवं क्षेत्रीय नागरिकों के लिए इतना सुन्दर और व्यवस्थित होने वाले उद्यान निर्माण का कार्य के रूप में बड़ी सौगात है। भूमिपूजन के अवसर पर महापौर जगत बहादुर सिंह अन्नू एवं विधायक नीरज सिंह ने बताया कि बरगी विधानसभा क्षेत्र के सम्माननीय नागरिकों एवं पार्षद उपस्थिति में आज उद्यान के निर्माण कार्य का भूमिपूजन के उपरांत प्रारंभ कराया गया है। विधायक श्री सिंह ने बताया कि वीर दुगार्दास राठौर वार्ड मॉं त्रिपुरा सुन्दरी मंदिर तेवर के समीप सड़क किनारे में लगभग 43 लाख रुपए की लागत से उद्यान निर्माण का कार्य कराया जायेगा। उन्होंने बताया कि शीघ्र ही उद्यान के विकास कार्यो को पूर्ण कराकर नागरिकों को उपयोग के लिए समर्पित किया जायेगा। इस अवसर पर उपयंत्री अमन सिंह तिवारी, तेवर स्कूल की प्राचार्य राजेश जगाती, व्याख्याता श्रीमती वेणु मिश्रा, श्रीमती साधना श्रीवास्तव, डॉ. सुवर्णा पाण्डेय, शिक्षक श्रीमती प्रतिभा श्रीवास्तव, संतराम सवैया, श्रीमती शीतल मालवीय, श्रीमती स्मृति सिंह, श्रीमती हरितिमा ठाकुर, श्रीमती शिखा विश्वकर्मा, श्रीमती संध्या मानेश्वर, प्रधान अध्यापक नीलेश कुमार पटैल, शिक्षक श्रीमती लाली दास, श्रीमती माधुरी शर्मा, श्रीमती मंजूषा गोंटिया, श्रीमती प्रतिभा दिघर्रा, श्रीमती सोनाली नामदेव, श्रीमती कीर्ति सोनी, दर्शना नामदेव, शिक्षा अग्रवाल, सुश्री रश्मि गौतम, स्मिता मेश्राम, देवेन्द्र कुमार जैन, संदीप कुमार तिवारी, भृत्य निशीथ शर्मा, सुरील कुमार उपाध्याय एवं छात्राऐं (कन्या) रिया लोधी, लक्ष्मी यादव, चांदनी यादव, अनामिका लोधी, वैष्णवी लोधी, प्रिंसी चौधरी, आरूषी रैकवार आदि उपस्थित रहे।

नगर निगम में भ्रष्टाचार के विरोध में कांग्रेस करेगी चरणबद्द आंदोलन

त्रिपुरी टाईम्स • जबलपुर
www.tripuritimes.com

नगर निगम जबलपुर में भ्रष्टाचार बढ़ता जा रहा है। कांग्रेस पार्षद दल की पत्रकार वार्ता में नेता प्रतिपक्ष अमरीश मिश्रा ने नगर सरकार पर आरोप लगाते हुए बताया कि नगर निगम के अधिकारी अपनी कमीशन बाजी में व्यस्त और मस्त है, उन्हें गुणवत्ता पूर्ण कार्य और आम जनता से कोई लेना-देना नहीं है। नगर निगम के मुखिया भी इसमें संलिप्त हैं। कांग्रेस पार्षद दल नगर सत्ता के खिलाफ 8 फरवरी से चरणबद्ध आंदोलन करेगा। जिसमें हम विधानसभा स्तर पर विरोध प्रदर्शन करेंगे, उसके बाद वार्ड स्तर पर हम प्रदर्शन करेंगे।

अबाक्स का नए वर्ष कैलेंडर विमोचित

त्रिपुरी टाईम्स • जबलपुर
www.tripuritimes.com

आदिवासी बहुजन कल्याण संघ(अबाक्स)के जिला शाखा के वार्षिक कैलेंडर का विमोच शहर के प्रथम नागरिक जगत बहादुर सिंह अन्नू महापौर के कर कमलों द्वारा किया गया इस अवसर पर अबाक्स के प्रदेश अध्यक्ष देवेश चौधरी,जिला अध्यक्ष शिवकुमार गोटियां एड तेज कुमार भगत,शिवनाथ चौधरी आलम,एड तरुण रोहितास,कमलेश धपोड़कर डॉ बी एल झरिया,शुभम चौधरी, डॉ शारदा पटेल राकेश मून,सोने लाल उरैती,दीपक चौधरी,श्यामू कोरी,अनिल कोष्टा, एस पी मरावी,नरेंद्र जायसवाल,सत्येंद्र ब्यौहार,राजकुमार सिंह,सुनील चौधरी,अमित ठाकुर, समर सिंह गौड,राजेंद्र सिंह,राजेंद्र पिल्ले,धर्मेंद्र कुशवाहा,राजेश परोहा,राजेंद्र कुमार डोंगरे,नीतीश कटहरे,हरीश भानु प्रकाश रजक पटेल,महेश अहिरवार, प्रकाश चंदेल,शैलेश रजक,आदि सैकड़ों पदाधिकारी उपस्थित रहे।

एंडोमेंट अवार्ड में सम्मानित हुए महाकौशल के इंजीनियर्स और आर्किटेक्ट्स

त्रिपुरी टाईम्स • जबलपुर
www.tripuritimes.com

इंडियन कंक्रीट इंस्टीट्यूट जबलपुर सेंटर ने एंडोमेंट अवार्ड 2024 का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि इंजी डी.एल. वर्मा मुख्य अभियंता ठश्ऊअ, अपर नर्मदा नॉर्थ जोन एवं विशेष अतिथि इंजी एके डेहरिया मुख्य अभियंता वेन गंगा बेसिन,हफऊविभाग सिवनी रहे कार्यक्रम में विशेष अतिथि वक्ता के तौर पर इंजी दीपक अनंत गायकवाड (गुणवत्ता प्रमुख मुंबई अहमदाबाद हाई स्पीड रेल प्रोजेक्ट) उपस्थित रहे जिन्होंने देश में हो रहे आधुनिक निर्माण के विषय पर अपना प्रस्तुतीकरण दिया और उन्होंने मेगा परियोजनाओं में गुणवत्ता नियंत्रण उत्कृष्टता को क्रियान्वित और प्रोत्साहित करने हेतु आवश्यक सुझाव दिए । राष्ट्रगान से आरंभ हुए कार्यक्रम में अतिथियों का स्वागत आई सी आई जबलपुर सेंटर के चेयरमैन डॉ राजीव चांडक, सचिव डॉ संजय वर्मा, कोषाध्यक्ष इंजी नीरज ब्यौत्रा, जे के सीमेंट के इंडिया हेड इंजी शकुन वैद्य, क्लस्टर हेड इंजी सिद्धार्थ कोटिया, स्टेट हेड इंजी सुधीर मिश्रा ने किया ।

निर्माण के क्षेत्र में विशेष कार्यों की उपलब्धि हेतु इंजी श्री केदारनाथ अग्रवाल को लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड से सम्मानित किया गया कसीमेंट और कंक्रीट के उत्कृष्ट निर्माण के क्षेत्र में विशेष योगदान हेतु युवा आर्किटेक्ट आनंद दुबे एवं महिला आर्किटेक्ट बहार श्रीवास्तव को सम्मानित किया गया । इस कार्यक्रम में महाकौशल स्तर पर उत्कृष्ट निमार्णों को सम्मानित किया गया, जिसमें इंस्टीट्यूशन बिल्डिंग, कमर्शियल बिल्डिंग, इंफ्रास्ट्रक्चर, इंडिविजुअल रेजिडेंस और मल्टी ड्वेलिंग रेजिडेंस कैटेगरी साल 2024 में महाकौशल स्तर पर निर्मित विशेष जूरी सदस्यों द्वारा चयनित उत्कृष्ट स्ट्रक्चर्स व इनसे जुड़े इंजीनियर्स और आर्किटेक्ट्स को सम्मानित किया गया। विभिन्न कैटिगरीज में सम्मानित इंजीनियर एवं आर्किटेक्ट्स में इंजी दुष्यंत भैरवानी, कार्तिक चेलानी, विक्रांत धुर्वे, महेश कावले, डी एम ए डिजाइन स्टूडियो, डी आई पी स्ट्रक्चर कंसलटेंट, आर्किटेक्ट नीरज अग्रवाल, इंजी समीर नामदेव रहे । जूरी अवॉर्ड प्राप्त करने वालों में इंजी सौरभ सोनी, अनुज गुप्ता,आर्किटेक्ट पल्लवी सिंघई, इंजी सौरभ पारे, इंजी लोमेश टोंक, मोहित आर्किटेक्ट एंड डिजाइन एसोसिएट्स, इंजी अनिल धोपे रहे कइसके अलावा लगभग 50 इंजीनियर्स एवं आर्किटेक्ट्स को अप्रिशिएसन सर्टिफिकेट से सम्मानित किया गया । जूरी सदस्यों में जूरी अध्यक्ष राजीव चांडक, जूरी मेंबर्स – डॉ सुधीर भट्ट, डॉ मनीष दुबे, आर्किटेक्ट मनोज निरंजन, एवं इंजी. संकल्प श्रीवास्तव रहे ' कार्यक्रम में पूरे महाकौशल एवं जबलपुर से लगभग 150 इंजीनियर्स और आर्किटेक्ट्स के उपस्थित रहे ककार्यक्रम को सफल बनाने में आई सी आई जबलपुर सेंटर के ई सी मेंबर वैभव सिंघई संजय विश्वकर्मा एस बी त्रिपाठी ज्ञान मिश्रा प्रभात श्रीवास्तव का विशेष सहयोग रहा ।

भेड़ाघाट में गोद भराई एवं सुहागले कल

त्रिपुरी टाईम्स • जबलपुर
www.tripuritimes.com

हरे कृष्णा आश्रम भेड़ाघाट में निशुल्क माघ मास कल्पवास आज से 10 वर्ष से पहले चालू हुआ कल्पवास में सुबह चाय नाश्ता दोपहर भोजन रात्रि भोजन रहने की व्यवस्था सभी आश्रम के द्वारा निशुल्क हैं। 2 फरवरी रविवार प्रातः 9:00 बजे गोद भराई एवं सुहागाले का आयोजन होगा जिन माताओ बहनों को शादी उपरांत मातृत्व की प्राप्ति नहीं हुई है किन्नर संतो के द्वारा गोद भराई की रस्म अदायगी की जाएगी गोद भराई एवं सुहागिनों की सामग्री आश्रम द्वारा निशुल्क वितरित की जाएगी। किन्नर अखाड़ा के साथ हीरा दीदी कैट शर्मा बबली तिवारी काजल दीदी खिलौना दीदी राधिका दीदी पूजा दीदी मोना दीदी कामिनी दीदी गोद भराई की रस्में करेगी उपस्थिति की अपील नर्मदा महाआरती के संस्थापक डॉ सुधीर अग्रवाल अध्यक्ष डॉ शिव शंकर पटेल पं मनमोहन दुबे कल्पवास प्रमुख पप्पू चौबे कल्पवास सह प्रमुख श्याम मनोहर पटेल प्रशासनिक प्रमुख विनोद दीवान छप्पन भोग प्रमुख मनोज गुलाब बनी सुहागले एवं गोद भराई प्रमुख सुरेश विश्वकर्मा कैलाश विश्वकर्मा मोहित तिवारी आदि ने उपस्थित की अपील की है।

पमरे के एजीएम एवं पीसीएमई नितिन चौधरी सहित 114 रेलकर्मी सेवानिवृत्त

त्रिपुरी टाईम्स • जबलपुर
www.tripuritimes.com

पश्चिम मध्य रेल के मुख्यालय में कार्यरत अधिकारी अपर महप्रबन्धक एवं प्रमुख मुख्य यांत्रिक अभियंता नितिन चौधरी सहित 02 रेल कर्मचारियों सहित जबलपुर, भोपाल, कोटा मण्डलों एवं दोनों कारखानों में मिलाकर कुल 114 रेलकर्मी शुक्रवार 31 जनवरी 2025 को सेवानिवृत्त हुए। पश्चिम मध्य रेल मुख्यालय में माह के अंतिम कार्य दिवस 31 जनवरी 2025 को महाप्रबंधक श्रीमती शोभना बंदोपाध्याय ने अपर महप्रबन्धक एवं प्रमुख मुख्य यांत्रिक अभियंता नितिन चौधरी के अधिवार्षिता पर सेवानिवृत्ति संबंधित दस्तावेज एवं गोल्ड प्लेटेड सिलवर मेडल प्रदान किये। सेवानिवृत्ति पर रेल प्रशासन की ओर से स्वस्थ, सुखी और समृद्ध जीवन के लिए शुभकामनायें दी गई। सेवानिवृत्ति समारोह के अवसर पर प्रमुख मुख्य दूरसंचार एवं संकेत इंजीनियर एकनाथ मोहकर, प्रमुख मुख्य कार्मिक अधिकारी प्रभात, प्रमुख मुख्य इंजीनियर आशुतोष, वरिष्ठ उप महाप्रबंधक नीरज कुमार, प्रमुख मुख्य परिचालन प्रबंधक गुरिंदर मोहन सिंह, प्रमुख मुख्य वाणिज्य प्रबंधक कुशाल सिंह, प्रमुख मुख्य विद्युत इंजीनियर मुकेश, प्रमुख मुख्य भण्डार प्रबंधक एम के गुप्ता, प्रमुख मुख्य संरक्षा अधिकारी प्रवीन खोराना, प्रमुख मुख्य चिकित्सा निदेशक डॉ. श्याम सुन्दर, प्रधान वित्त सलाहकार सुमनजीत कौर, प्रमुख मुख्य सुरक्षा आयुक्त राजीव कुमार यादव, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी (निर्माण) एम, एस हाशमी एवं सचिव महाप्रबंधक राहुल जयपुरियार, उप महाप्रबंधक (सामान्य) अनुराग पाण्डेय सहित अन्य विभाग के प्रमुख मुख्य विभागाध्यक्ष सहित अन्य वरिष्ठ अधिकारी भी उपस्थित रहे।

चाँद दिखा, शबे बारात 13 फरवरी को

त्रिपुरी टाईम्स • जबलपुर
www.tripuritimes.com

मुफ़्ती ए आजम मध्य प्रदेश हजरत मौलाना डाक्टर मुशाहिद रजा कादरी के अनुसार 30 जनवरी जुमेरात मुताबिक 29 रज्ब को शाबानुल मोअज्जम (शबे बारात) का चांद नजर आ गया है। लिहाजा 31 जनवरी को माहे शाबानुल मोअज्जम की पहली तारीख थी। आगामी 13 फरवरी जुमेरात को शबे बारात मनाई जाएगी । प्रशासन से अपील – मुस्लिम समाज के प्रमुख हाजी कदीर सोनी, हाजी मकबूल रजवी, हाजी शेख जमील नियाजी, मतीन अंसारी, पप्पू वसीम खान, हाजी मुईन खान, जमा खान, याकूब अंसारी, आमीन कुरैशी, मुबारक कादरी, सैय्यद कादिर कादरी, अकबर खान सरवर, शमीम अंसारी गुड्डू, अशरफ मंसूरी आदि ने शबे बारात के मौके पर मुस्लिम बहुल क्षेत्रों व खास तोर पे मस्जिद व कब्रस्थान के पास साफ सफाई जल आपूर्ति एवं विधुत प्रवाह निर्बाध रूप जारी रखने की अपील की है।

पंजाबी महासंघ जबलपुर की महिला समिति का मिलन समारोह संपन्न

अमृतवाणी पाठ से प्रारंभ हो पंजाबी गीतों, चुटकुलों के साथ संपन्न हुआ पंजाबी महासंघ महिला समिति का समागम।

त्रिपुरी टाईम्स • जबलपुर
www.tripuritimes.com

पंजाबी महासंघ जबलपुर की महिला समिति का मिलन समारोह स्थानीय नोदर ब्रिज स्थित होटल स्वयं में संपन्न हुआ` कार्यक्रम का शुभारंभ महिला समिति की जोन अध्यक्ष व संरक्षक नीता चावला, सचिव नम्रता भाटिया, रूचि गुलाटी जबलपुर विंग की महिला अध्यक्ष नीता नारंग जी ने दीप प्रज्वलित कर किया। कार्यक्रम के शुभारंभ में सर्वप्रथम अमृतवाणी का पाठ किया गया, तत्पश्चात महिलाओं ने सोलो परफॉर्मेंस, पंजाबी कविताओं का पाठ, चुटकुले आदि की मनोरंजन प्रस्तुति दी। मिलन समारोह कार्यक्रम में 10 से अधिक महिलाओं ने संरक्षक रिंकू विज, अध्यक्ष इंद्र मोहन भाटिया एवं सचिव अरविंद नैय्यर, सदस्यता अभियान प्रभारी राकेश महाजन के मार्गदर्शन व उपस्थित में पंजाबी महासंघ जबलपुर की आजीवन सदस्यता भी ग्रहण की। संस्था ग्रहण करने वालों में प्रमुख रूप से श्रीमती रश्मि सरीन श्रीमती अंजू सोबती, श्रीमती नेहा मकान, श्रीमती शिखा मकान, श्रीमती सुनीता भसीन शामिल थी । कार्यक्रम प्रभारी सन्या सूरी व निधि तनेजा ने बड़ी संख्या में एकत्र हुई पंजाबी बहनों के इस मिलन समारोह की सफलता पर हर्ष व्यक्त करते हुए कहा कि हम बहनों को अपने समाज व परिवार को मजबूत करने हेतु एवं संस्कारधानी जबलपुर में पीड़ित मानवता की सेवा हेतु ऐसे आयोजन आवश्यक रूप से करते रहना चाहिए। कार्यक्रम के समापन पर आभार प्रदर्शन श्रीमती एकता नैय्यर जी द्वारा किया गया । इस भव्य आयोजन को सफल बनाने में प्रमुख रूप से श्रीमती योगिता विज, प्रीति पाहवा, विभा भाटिया, अंजलि विग, श्रीमती रचना भाटिया, शैली अरोरा, किरण वाधवा, रितु गुलाटी, बबीता महाजन, शिप्रा चड्ढा, उषा भसीन, हिमा कोहली, सरोज मक्कड़, आदि का प्रमुख योगदान रहा ।

बगला मुखी माता के 25वे वार्षिकोत्सव धूमधाम से निकली शोभायात्रा

त्रिपुरी टाईम्स • जबलपुर
www.tripuritimes.com

संस्कारधानी वासियों के लिए शुक्रवार बड़े ही गौरव हर्षोल्लास का दिन रहा। माता रानी बगलामुखी पीतांबरा देवी के 25वे वार्षिकोत्सव के उपलक्ष में श्री बगलामुखी पीठाधीश्वर स्वामी चैतन्यानंद महाराज के नेतृत्व में बड़े ही धूमधाम से मनाया ज रहा है। इस मौके पर उत्तर मध्य विधानसभा के विधायक अभिलाष पांडे और अन्य गुरु जनों श्रेष्ठ के द्वारा माता बगलामुखी की भव्य आराधना आरती, वंदन के साथ महोत्सव की शुरूआत की गई। साथ ही पीतांबरा बगलामुखी माता की भव्य शोभा यात्रा नगर में निकाली गई जो की बगलामुखी मंदिर से होते हुए राम मंदिर से घूम कर वापस बगलामुखी मंदिर में शोभायात्रा का समापन हुआ। विशाल महा आरती के साथ पूजन अर्चन कर भंडारे व प्रसादी का आयोजन किया गया।

संस्कारधानी का बेटा बादल ने हरियाणा के लोहारू राष्ट्रीय खेल प्रतियोगिता में फहराया अपना परचम – महापौर श्री अन्नू

त्रिपुरी टाईम्स • जबलपुर
www.tripuritimes.com

हरियाणा के लोहारू में आयोजित सामान्य श्रेणी की 34वीं नेशनल स्ट्रेंथ लिफ्टिंग और इंक्लाइन बेंच प्रेस चैंपियनशिप में संस्कारधानी का बेटा होनहार खिलाड़ी घमापुर निवासी बादल सिंह परिहार हरियाणा के लोहारू राष्ट्रीय खेल प्रतियोगिता में उत्कृष्ट प्रदर्शन कर एक साथ 2 गोल्ड मेडल हासिल किया है। राष्ट्रीय स्तर पर मिली इस उपलब्धि पर आज महापौर जगत बहादुर सिंह अन्नू ने अपने कार्यालय में बुलाकर निगमाध्यक्ष रिकुंज विज के साथ बादल सिंह परिहार का स्वागत एवं सम्मान किया और उनका हौसला आफजाई किया। इस अवसर पर महापौर जगत बहादुर सिंह अन्नू ने अपनी ओर से 51 सौ रुपए की नगद उपहार राशि भेंट की और उन्हें आगे बढ़ने के लिए आगे भी हर संभव मदद करने का आश्वासन दिया। सम्मानित करते हुए महापौर ने श्री बादल को कहा कि ये हमारे जबलपुर ही नहीं बल्की हमारे देश के गौरव हैं ऐसे प्रदेश के एकलौते जांबाज खिलाड़ी को सम्मानित करते हुए हम गौरवांवित महसूस करते हैं, जिन्होंने 2 स्वर्ण पदक हासिल किये। गौरतलब है, कि राष्ट्रीय खिलाड़ी बादल सिंह परिहार मध्यप्रदेश के एक मात्र ऐसे खिलाड़ी हैं जिनके एक दुर्घटना में दोनो हाथ टूटे हुए हैं उसके बावजूद नेशनल स्ट्रेंथ लिफ्टिंग और इंक्लाइन बेंच प्रेस चैंपियनशिप में अपना परचम लहराया है। सम्मान के मौके पर बादल सिंह परिहार के पिता संजय सिंह परिहार भी उपस्थित रहे और महापौर श्री अन्नू एवं निगमाध्यक्ष रिकुंज विज के प्रति इस आत्मीय स्नेह के लिए कृतज्ञता भी जाहिर की।

जबलपुर मॉडल पुस्तक का विमोचन आज

त्रिपुरी टाईम्स • जबलपुर
www.tripuritimes.com

ह्लजबलपुर मॉडलह्व पुस्तक के लेखक, आई.ए.एस. अधिकारी, नगर निगम जबलपुर के पूर्व आयुक्त एवं नरसिंहपुर जिले के पूर्व कलेक्टर वेद प्रकाश के द्वारा लिखि पुस्तक जबलपुर मॉडल का आज दिनांक 1 फरवरी 2025 को अपरान्ह 02:30 बजे से भॅंवरताल के समीप कल्चर स्ट्रीट, संस्कृति भवन में विमोचन किया जायेगा। इस अवसर पर वेदप्रकाश ने सभी सम्माननीय जनों एवं इष्ट मित्रों से उपस्थिति की अपील की है।

विज्ञापन एवं एजेंसी के लिए संपर्क करें
सिटी ऑफिस- त्रिपुरी भवन, जेडीए योजना क्रं. 18, ब्लाक नं. 9 मेजेनाइन फ्लोर, सिविक सेंटर, जबलपुर।
फोन : 0761-4085321

नरसिंह मन्दिर में आवश्यक बैठक आज

त्रिपुरी टाईम्स • जबलपुर
www.tripuritimes.com

नगर के गौरवशाली सन्त और संस्कारधानी की प्राचीन सिद्ध श्रीनृसिंह पीठ के महंत नरसिंह पीठाधीश्वर नरसिंहदास महाराज का विगत दिवस प्रयागराज के गंगा तट पर महाकुंभ में अखाड़ों के परमपूज्य संतों महंतों द्वारा पट्टाभिषेक कर श्रीमद् जगतगुरु रामरंगी द्वाराचार्य डॉ स्वामी नरसिंह देवाचार्य महाराज पद पर प्रतिष्ठित कर सुशोभित किया गया है। उनके प्रथम नगर आगमन पर उनका नगर प्रवेश पर भव्य स्वागतम यात्रा निकालने का भक्तों का आग्रह है। यात्रा कब और किस मार्ग से निकाली जावे, इस हेतु सभी जनप्रतिनिधियों, अनुयायियों, भक्तों, गणमान्य नागरिकों की आवश्यक और वृहद बैठक आज सांयकाल 4.30 बजे श्री नरसिंह मन्दिर शास्त्रीपुल में आयोजित है। सभी धर्मावलंबी भक्तों से अनुरोध है समय पर बैठक में पहुंच कर *स्वागतम यात्रा* को भव्य और गरिमामय बनाने में अपना मार्गदर्शन और सुझाव देने बैठक में उपस्थित होकर श्याम साहनी अध्यक्ष अशोक मनोध्या महामंत्री,गुलशन माखीजा कोषाध्यक्ष ,श्री सनातन धर्म महासभा, नरसिंह मन्दिर गीताधाम परिवार भक्तमंडल व समस्त पदाधिकारी सदस्यों ने की है।

भाजपा संभागीय कार्यालय में सुंदरकांड आज

त्रिपुरी टाईम्स • जबलपुर
www.tripuritimes.com

नवनिर्वाचित भाजपा नगर अध्यक्ष रत्नेश सोनकर जनप्रतिनिधियों एवं वरिष्ठ जनों की उपस्थिति में करेंगे पदभार ग्रहण

भाजपा के नवनिर्वाचित नगर अध्यक्ष रत्नेश सोनकर के पदभार ग्रहण कार्यक्रम के उपलक्ष्य में भाजपा संभागीय कार्यालय रानीताल में आज सुबह 10 बजे से बृहत संगीतमय सुंदरकांड पाठ का आयोजन किया गया है। श्री सोनकर दोपहर 12:30 बजे लोक निर्माण मंत्री राकेश सिंह, राज्यसभा सांसद श्रीमती सुमित्रा वाल्मिकी, सांसद आशीष दुबे, विधायक अशोक रोहाणी, अभिलाष पांडे, पूर्व विधायक अंचल सोनकर, शरद जैन, हरेंद्रजीत सिंह बब्बू, पूर्व अध्यक्ष प्रभात साहू एवं वरिष्ठ जनों की उपस्थिति में पदभार ग्रहण करेंगे। आज सुबह 10 बजे भाजपा कार्यालय में सुंदरकांड के पाठ का आयोजन होगा इसके बाद नगर अध्यक्ष सोनकर महापुरुषों के चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित करने के पश्चात दोपहर 12:30 बजे सभी जनप्रतिनिधियों एवं वरिष्ठ जनों की उपस्थिति में दायित्व निर्वहन हेतु पदभार ग्रहण करेंगे। इसके बाद भोग प्रसाद, प्रीतिभोज का आयोजन किया गया है। नवनिर्वाचित भाजपा नगर अध्यक्ष रत्नेश सोनकर एवं नगर संगठन ने बूथ समिति, मंडलों, पार्षदों, जिले के सभी कार्यकर्ताओ से कार्यक्रम में उपस्थिति की अपील की है।

संपादकीय

भारत-इंडोनेशिया के बीच संबंध पुराना, दोनों देशों का एक दूसरे के प्रति सहयोग का नया सफर

भारत और इंडोनेशिया के बीच संबंधों में सहयोग का सफर बहुत पुराना रहा है और अमूमन हर मौके पर दोनों देशों ने नाजुक मौकों पर एक दूसरे का साथ दिया है। इस वर्ष गणतंत्र दिवस पर मुख्य अतिथि के रूप में जब वहां के राष्ट्रपति प्रबोवो सुबियांतो भारत आए, तो रिश्तों के नए आयाम भी खुले। कूटनीतिक पहलू से देखें तो दक्षिण चीन सागर में चीन की बढ़ती सैन्य ताकत के बीच अंतरराष्ट्रीय कानूनों की एक 'पूर्ण और प्रभावी' आचार संहिता की वकालत करके दोनों देशों ने इस समूचे इलाके में एक मजबूत हस्तक्षेप किया है। यह इसलिए भी महत्त्वपूर्ण है कि दक्षिण चीन सागर का क्षेत्र हाइड्रोकार्बन का एक बड़ा स्रोत है। इसलिए चीन इस समूचे इलाके पर अपना प्रभुत्व जताता रहा है। वहीं विएतनाम, फिलीपींस और ब्रुनेई भी इस पर दावा करते हैं। साथ ही, भारत और इंडोनेशनिया ने आपस में आतंकवाद विरोधी सहयोग बढ़ाने का संकल्प लिया और बिना किसी 'दोहरे मापदंड' के इस वैश्विक खतरे से निपटने के लिए ठोस प्रयास करने का आह्वान किया। यह छिपा नहीं है कि दुनिया के कई देश और खासकर भारत के पड़ोसी कुछ देशों में आतंकवाद के मसले पर कथनी और करनी में कितना फर्क है। ऐसे में आतंकवाद के खिलाफ मोर्चा लेने के संदर्भ में भारत के साथ इंडोनेशिया का मुखर होना अहम है। साथ ही सांस्कृतिक सहयोग, पारंपरिक चिकित्सा, स्वास्थ्य, डिजिटल विकास और समुद्री सुरक्षा के मामले में कई सहमति पत्रों पर भी हस्ताक्षर हुए और रक्षा के मोर्चे पर भी सहयोग को मजबूत करने की घोषणा हुई। गौरतलब है कि मौजूदा भूराजनीति के बदलते परिदृश्य में अलग-अलग मामलों में देशों के बीच जो नए समीकरण बन रहे हैं या फिर उनकी ओर से जो नीतियां अपनाई जा रही हैं, उससे उपजी चिंता के मद्देनजर संबंधों के नए सिरे खुलना भी स्वाभाविक है। हालांकि इस संदर्भ में मौजूदा दौर में जैसे समीकरण बन रहे हैं, उसके अनुकूल ज्यादा साहस के साथ ठोस पहल की जरूरत है। उम्मीद की जानी चाहिए कि अतीत की बुनियाद से आगे बढ़ते हुए भारत और इंडोनेशिया के बीच अब सहयोग का नया सफर शुरू होगा।

30 लोगों की मौत बड़ी खबर है या 30 करोड़ लोगों का सकुशल स्नान करना बड़ी बात है?

महाकुंभ मेले में मौनी अमावस्या पर्व पर मची भगदड़ में 30 श्रद्धालुओं की मृत्यु होना बहुत दुखद खबर है। लेकिन इस हादसे के बावजूद आठ करोड़ से अधिक श्रद्धालुओं ने उसी दिन स्नान किया और सकुशल वापस घर गये यह उत्तर प्रदेश प्रशासन की एक बड़ी उपलब्धि भी है। उत्तर प्रदेश के प्रयागराज जिले की आबादी देखें तो वह लगभग 60 लाख के आसपास है। कुम्भ मेले में अब तक आ चुके श्रद्धालुओं का आंकड़ा देखें तो वह 30 करोड़ के पास पहुँचने वाला है। योगी सरकार का आकलन है कि 26 फरवरी तक चलने वाले धरती के इस सबसे बड़े मेले में 45 करोड़ के आसपास लोग आयेंगे। ऐसे में आप कल्पना करके देखिये कि इतनी बड़ी भीड़ को संभालने और उनके लिए तमाम तरह की व्यवस्थाएं करने के लिए प्रशासन ने कितने समय से कितने प्रयास किये होंगे।

भगदड़ की एक घटना को लेकर पूरी व्यवस्था पर प्रश्न उठाने वालों को यह भी देखना चाहिए कि मौनी अमावस्या से पहले ही रात को लगभग पांच करोड़ लोग सकुशल स्नान कर चुके थे और घटना के बाद भी आठ करोड़ लोगों ने सकुशल स्नान किया था। इससे पहले के अमृत स्नान के दौरान भी लगभग पांच करोड़ श्रद्धालुओं ने स्नान किया था लेकिन किसी को खरोंच तक नहीं आई थी। जिन लोगों को एक दिन में एक जगह पर आठ से दस करोड़ लोगों का स्नान करना मामूली बात लगती है उन्हें पता होना चाहिए कि यह संख्या कई देशों की कुल जनसंख्या से भी अधिक है।

आपने देखा होगा कि भगदड़ की घटना की खबर मिलते ही विपक्ष के कई नेता इतनी तेजी से बयान जारी करने लग गये थे जैसे कि वह पहले से टाइप करके रखा गया था और किसी हादसे की प्रतीक्षा की जा रही थी ताकि योगी सरकार को घेरा जा सके। कुछ मीडिया संस्थानों ने भी सनसनी फैलाने में देरी नहीं लगाई और अपनी जिम्मेदारी को नहीं समझते हुए सिर्फ अव्यवस्था संबंधी खबरें चलाईं। जबकि सच्चाई यह थी कि घटना के कुछ ही मिनटों के भीतर हालात पर काबू पाया जा चुका था और इसी का परिणाम था कि पूरे दिन स्नान सुचारू रूप से चला और आज भी करोड़ों लोग अब तक डुबकी लगा चुके हैं और सरकार के इंतजामों की तारीफ कर रहे हैं।

कुछ लोगों ने सोशल मीडिया और मीडिया के मंचों से सवाल उठाया कि जब यूपी सरकार सुबह-शाम श्रद्धालुओं की संख्या के आंकड़े जारी कर रही है तो उसे सुबह मारे गये श्रद्धालुओं की संख्या बताने में सोलह घंटे क्यों लग गये? ऐसे लोगों को समझना होगा कि महाकुंभ मेले में आ रहे श्रद्धालुओं की गिनती के लिए एआई कैमरों सहित तमाम तरह की तकनीक की मदद ली जा रही है और भगदड़ में मारे गये लोगों की संख्या बताने में समय इसलिए लगा होगा क्योंकि मौत का आंकड़ा किसी की मृत्यु के बाद ही बताया जाता है। यदि आपने घटना के बाद के वीडियो देखें हों तो उसमें साफ प्रदर्शित हो रहा है कि घायल अवस्था में कई लोगों को एम्बुलेंसे ग्रीन कॉरिडोर बनाकर तेजी से अस्पताल ले जा रही हैं। यूपी सरकार सुबह से ही कह रही थी कि कई लोग गंभीर रूप से घायल हुए हैं। हो सकता है कि किसी की इलाज के दौरान मृत्यु हुई हो या किसी की अस्पताल लाये जाने के दौरान ही मृत्यु हो गयी हो। यह भी सर्वविदित है कि जब तक डॉक्टर किसी को मृत घोषित नहीं कर देते और उसकी पहचान तथा अन्य औपचारिकताएं पूरी नहीं हो जातीं तब तक आंकड़े सामने नहीं आते। यहां यह भी ध्यान रखना चाहिए कि एक हादसा जो हो चुका था उसके बारे में उस समय ज्यादा जानकारी देने से यदि हालात बिगड़ जाते तो और भी हादसे हो सकते थे क्योंकि करोड़ों की संख्या में लोग एक जगह पर मौजूद थे।

30 श्रद्धालुओं की मौत होना हृदय विदारक है और मृतकों के परिजनों की दशा समझी जा सकती है लेकिन हमें यह भी देखना होगा कि अब तक 30 करोड़ लोग सकुशल स्नान करके जा चुके हैं। देखा जाये तो कुंभ मेले की बड़ी तस्वीर भगदड़ की एक घटना की नहीं बल्कि यहां करोड़ों की संख्या में उत्साह के साथ स्नान कर बिना किसी नुकसान के जा चुके श्रद्धालुओं की है। यहां हमें यह भी समझना होगा कि भगदड़ या भूकंप या दुर्घटनाओं या हत्याओं से होने वाली मौतों पर प्रतिक्रिया करते समय या उससे संबंधित समाचार दिखाते समय हमें संयम बरतना चाहिए। बहरहाल, निश्चित रूप से कुंभ भगदड़ बड़ी खबर है। लेकिन भारत जैसे भीड़भाड़ वाले देश में भगदड़ से होने वाली मौतें विभिन्न बीमारियों और कारणों से होने वाली कुल मौतों का केवल एक अंश मात्र हैं।

क्या बजट आम आदमी की उम्मीदों पर खरा उतरेगा?

केंद्रीय वित्तमंत्री निर्मला सीतारमण 1 फरवरी को लगातार अपना आठवां बजट पेश करेंगी। यह केंद्रीय बजट प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन सरकार का अपने तीसरे कार्यकाल का दूसरा पूर्ण वित्तीय बजट होगा। इस बार के बजट से हर सेक्टर की बड़ी उम्मीदें टिकी हुई हैं, इस बजट की घोषणाओं से भविष्य में राष्ट्र किन दिशाओं में आगे बढ़ेगा, उसकी मंशा एवं दिशा अवश्य स्पष्ट होगी। टैक्सपेयर्स भी इस बार वित्तमंत्री से इनकम टैक्स में राहत देने की उम्मीद कर रहा है। मिडिल-क्लास और वेतनभोगियों को भी राहत की उम्मीद है। वित्तमंत्री निर्मला सीतारमण की एक मौलिक सोच एवं दृष्टि से यह बजट दुनिया में भारतीय अर्थव्यवस्था को एक चमकते सितारे के रूप में स्थापित करने एवं सुदृढ़ आर्थिक विकास के लिये आगे की राह दिखाने वाला होगा। संभावना है कि इस बजट में समावेशी विकास, वंचितों को वरीयता, बुनियादी ढांचे में निवेश, क्षमता विस्तार, हरित विकास, महिलाओं एवं युवाओं की भागीदारी, मोदी की गारंटियों पर बल दिया जायेगा। इंफ्रास्ट्रक्चर, मैन्युफैक्चरिंग, डिजिटल और सामाजिक विकास की दृष्टि से देश को आत्मनिर्भर बनाने की रफ्तार को भी गति दी जायेगी। यह बजट देश को न केवल विकसित देशों में बल्कि इसकी अर्थव्यवस्था को विश्व स्तर पर तीसरे स्थान दिलाने के संकल्प को बल देने में सहायक बनेगा।

आम आदमी बढ़ती महंगाई, बेरोज़गारी और घटती खपत के बीच कुछ राहत की उम्मीद लगा रहा है। बजट, शिक्षा, रक्षा, उद्योग, महिलाओं और गरीब वर्गों के लिए सुधारों और प्रोत्साहनों का खाका तैयार करेगा। वित्त मंत्री से उम्मीद की जा रही है कि वे आयकर स्लैब में बदलाव करेंगी, जिससे वेतनभोगियों एवं करदाताओं को राहत मिलेगी। इस समय वेतनभोगी एवं करदाता की 15 लाख रुपये से अधिक की आमदनी पर 30 प्रतिशत टैक्स लगता है। सरकार 10 लाख रुपये तक की आय को पूरी तरह टैक्स-फ्री करने और 15 से 20 लाख रुपये की आमदनी पर 25 प्रतिशत का नया टैक्स स्लैब लाने पर विचार कर रही है। इससे मध्यम वर्ग के लोगों की खर्च करने की क्षमता बढ़ेगी, जो अर्थव्यवस्था को प्रोत्साहित करेगा। केंद्र सरकार बजट सत्र 2025 में नया आयकर कानून पेश करने की योजना बना रही है, जो करदाताओं को लाभान्वित करेगा और कर प्रणाली को सरल बनाएगा। इसके अलावा, सरकार इस बार के बजट में शेयर से होने वाली कमाई पर टैक्स लगाने का प्रावधान कर सकती है। इसमें शेयरों से मिलने वाले लाभांश, ब्याज से होने वाली कमाई और पूंजीगत लाभ पर भी टैक्स लगाया जा सकता है।

यह बजट न केवल देश की आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करेगा, बल्कि सामाजिक और तकनीकी विकास की दिशा में भारत को नई ऊंचाइयों पर ले जाएगा। बढ़ती महंगाई पर नियंत्रण की भी संभावनाएं हैं। इस बजट से विभिन्न क्षेत्रों में कई महत्वपूर्ण घोषणाओं की उम्मीद है, जो अर्थव्यवस्था को रफ्तार देने और आम जनता को राहत प्रदान करने के उद्देश्य से की जा सकती हैं। आम आदमी के लिए सबसे पीड़ादायक टैक्स का बोझ है। हालांकि वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी) जैसे टैक्स का फ़ैसला समय-समय पर जीएसटी काउंसिल में लिया जाता है, लेकिन सरकार से उम्मीद की जाती है कि वो इन शुल्कों को और तर्कसंगत बनाकर आम लोगों को कुछ राहत दे। अर्थव्यवस्था की रफ़्तार धीमी पड़ने के कारण निवेशकों में घबराहट है और इसने रोज़गार के अवसरों को भी कम किया है जबकि महंगाई के हिसाब से मज़दूरी और वेतन में बढ़ोतरी नहीं होने से ख़ासकर सीमित आमदनी वाले परिवारों को मुश्किलों का सामना करना पड़ रहा है। पिछली तिमाहियों में कंपनियों के निराशाजनक प्रदर्शन ने भी इन हालात को मुश्किल बनाया है। जिससे नौकरी चाहने वाले युवाओं को पर्याप्त संख्या में रोज़गार नहीं मिल पा रहा है। इन सारे कारकों के कारण मध्य वर्ग ने अपने खर्चों में कटौती की है जिससे पिछले कुछ महीनों में उपभोग में गिरावट आई है। इन परेशानियों एवं चिन्ताओं को कम करने में इस बार का बजट राहतभरा होने की उम्मीदे हैं। बजट में विभिन्न उद्योगों, विशेषकर सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों (एमएसएमई) के लिए प्रोत्साहन योजनाओं की घोषणा से रोजगार सृजन और आर्थिक विकास को बढ़ावा मिलेगा। सड़कों, रेल, बंदरगाहों और हवाई अड्डों के विकास के लिए बड़े पैमाने पर निवेश की योजना बनाई जा सकती है, जिससे लॉजिस्टिक्स में सुधार होगा और व्यापार को बढ़ावा मिलेगा। स्वास्थ्य सेवाओं की पहुंच बढ़ाने और शिक्षा के स्तर में सुधार के लिए बजट में विशेष प्रावधान किए जा सकते हैं, जिससे मानव संसाधन का विकास हो सके। महिलाओं के लिए विशेष योजनाओं की घोषणा की जा सकती है, डिजिटल बुनियादी ढांचे को मजबूत करने और डिजिटल लेन-देन को बढ़ावा देने के लिए नई योजनाएं लाई जा सकती हैं। उच्च शिक्षा और अनुसंधान संस्थानों के लिए अतिरिक्त अनुदान दिया जा सकता है। विज्ञान, प्रौद्योगिकी, और चिकित्सा के क्षेत्र में इनोवेशन को प्रोत्साहित करने के लिए नई योजनाएं लाई जा सकती हैं। मेक इन इंडिया पहल के तहत स्वदेशी हथियार निर्माण को प्रोत्साहित किया जाएगा। साइबर खतरों से निपटने के लिए रक्षा बजट का एक हिस्सा डिजिटल सुरक्षा पर केंद्रित हो सकता है। बुलेट ट्रेन परियोजनाओं और रेल नेटवर्क के आधुनिकीकरण को गति दी जाएगी। इलेक्ट्रिक वाहनों (ईवी) के लिए सब्सिडी और बैटरी निर्माण में निवेश बढ़ाने की योजनाएं पेश की जा सकती हैं। गरीब कल्याण अन्न योजना का विस्तार कर मुफ्त राशन वितरण को जारी रखा जाएगा। प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में घर उपलब्ध कराने के लिए बजट बढ़ाया जाएगा।

वित्तीय वर्ष 2025-26 के केंद्रीय बजट से मिल सकती हैं कई सौगातें

केंद्र सरकार ने हालांकि मुद्रा स्फीति पर अंकुश लगाने में सफलता तो अर्जित कर ली है परंतु उच्च स्तर पर बनी रही मुद्रा स्फीति के कारण कुल मिलाकर आम नागरिकों, विशेष रूप से मध्यमवर्गीय परिवारों, की खर्च करने की क्षमता पर विपरीत प्रभात जरूर पड़ा है और कुछ मध्यमवर्गीय परिवारों के गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन कर रहे परिवारों की श्रेणी में जाने का खतरा उत्पन्न हो गया है। किसी भी देश में मध्यमवर्गीय परिवारों की जितनी अधिक संख्या रहती है, उस देश की आर्थिक विकास दर ऊंचे स्तर पर बनी रहती है क्योंकि मध्यमवर्गीय परिवार ही विभिन्न प्रकार के उत्पादों (दोपहिया वाहन, चारपहिया वाहन, फ्रिज, एयर कंडीशनर जैसे उत्पादों एवं नए फ्लेट्स एवं भवनों आदि) को खरीदने पर अपनी आय के अधिकतम भाग का उपयोग करता है। इससे आर्थिक चक्र में तीव्रता आती है और इन उत्पादों की बाजार में मांग के बढ़ने के चलते इनके उत्पादन को विभिन्न कम्पनियों द्वारा बढ़ाया जाता है, इससे इन कम्पनियों की आय एवं लाभप्रदता में वृद्धि होती है एवं देश में रोजगार के नए अवसर निर्मित होते हैं। अतः दिनांक 1 फरवरी 2025 को केंद्र सरकार की वित्त मंत्री श्रीमती निर्मला सीतारामन से अब यह अपेक्षा की जा रही है कि वे वित्तीय वर्ष 2025-26 के केंद्र सरकार के बजट में मध्यमवर्गीय परिवारों के लिए विशेष रूप से आय कर में छूट की घोषणा करेंगी।

वित्तीय वर्ष 2024-25 की पहली छमाही (अप्रेल-सितम्बर 2024) में भारत की आर्थिक विकास दर कुछ कमजोर रही है। प्रथम तिमाही (अप्रेल-जून 2024) में तो सकल घरेलू उत्पाद में वृद्धि दर गिरकर 5.2 प्रतिशत के निचले स्तर पर आ गई थी। इसी प्रकार द्वितीय तिमाही (जुलाई-सितम्बर 2024) में भी सकल घरेलू उत्पाद में वृद्धि दर 5.4 प्रतिशत रहने का अनुमान लगाया गया है। इससे वित्तीय वर्ष 2024-25 में यह वृद्धि दर घटकर 6.6 प्रतिशत से 6.8 प्रतिशत के बीच रहने का अनुमान है, जबकि वित्तीय वर्ष 2023-24 में भारत के सकल घरेलू उत्पाद में वृद्धि दर 8.2 प्रतिशत की रही थी। वित्तीय वर्ष 2024-25 की प्रथम छमाही में आर्थिक विकास दर के कम होने के कारणों में मुख्य रूप से देश में सम्पन्न हुए लोक सभा चुनाव है और आचार संहिता के लागू होने के चलते केंद्र सरकार के पूंजीगत खर्चों एवं अन्य खर्चों में भारी भरकम कमी दृष्टिगोचर हुई है। साथ ही, देश में मानसून की स्थिति भी ठीक नहीं रही है। केंद्र सरकार ने हालांकि मुद्रा स्फीति पर अंकुश लगाने में सफलता तो अर्जित कर ली है परंतु उच्च स्तर पर बनी रही मुद्रा स्फीति के कारण कुल मिलाकर आम नागरिकों, विशेष रूप से मध्यमवर्गीय परिवारों, की खर्च करने की क्षमता पर विपरीत प्रभात जरूर पड़ा है और कुछ मध्यमवर्गीय परिवारों के गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन कर रहे परिवारों की श्रेणी में जाने का खतरा उत्पन्न हो गया है। किसी भी देश में मध्यमवर्गीय परिवारों की जितनी अधिक संख्या रहती है, उस देश की आर्थिक विकास दर ऊंचे स्तर पर बनी रहती है क्योंकि मध्यमवर्गीय परिवार ही विभिन्न प्रकार के उत्पादों (दोपहिया वाहन, चारपहिया वाहन, फ्रिज, एयर कंडीशनर जैसे उत्पादों एवं नए फ्लेट्स एवं भवनों आदि) को खरीदने पर अपनी आय के अधिकतम भाग का उपयोग करता है। इससे आर्थिक चक्र में तीव्रता आती है और इन उत्पादों की बाजार में मांग के बढ़ने के चलते इनके उत्पादन को विभिन्न कम्पनियों द्वारा बढ़ाया जाता है, इससे इन कम्पनियों की आय एवं लाभप्रदता में वृद्धि होती है एवं देश में रोजगार के नए अवसर निर्मित होते हैं। भारत में पिछले कुछ समय से मध्यमवर्गीय परिवारों की व्यय करने की क्षमता पर विपरीत प्रभाव पड़ा है अतः दिनांक 1 फरवरी 2025 को केंद्र सरकार की वित्त मंत्री श्रीमती निर्मला सीतारामन से अब यह अपेक्षा की जा रही है कि वे वित्तीय वर्ष 2025-26 के केंद्र सरकार के बजट में मध्यमवर्गीय परिवारों के लिए विशेष रूप से आय कर में छूट की घोषणा करेंगी। देश के कई अर्थशास्त्रियों का तो यह भी कहना है कि न केवल आय कर में बल्कि कारपोरेट कर में भी कमी की घोषणा की जानी चाहिए। इनफोसिस के संस्थापक सदस्यों में शामिल श्री मोहनदास पई का तो कहना है कि 15 लाख से अधिक की आय पर लागू 30 प्रतिशत की आय कर की दर को अब 18 लाख से अधिक की आय पर लागू करना चाहिए। आय कर मुक्त आय की सीमा को वर्तमान में लागू 7.75 लाख रुपए की राशि से बढ़ाकर 10 लाख रुपए कर देना चाहिए। आयकर की धारा 80सी के अंतर्गत किए जाने निवेश की सीमा को भी 1.50 लाख रुपए की राशि से बढ़ाकर 2 लाख रुपए कर देना चाहिए। मकान निर्माण हेतु लिए गए ऋण पर अदा किए जाने वाले ब्याज पर प्रदान की जाने वाली आयकर छूट की सीमा को 2 लाख रुपए से बढ़ाकर 3 लाख रुपए किया जाना चाहिए। फरवरी 2025 माह में ही भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा मोनेटरी पोलिसी की घोषणा भी होने जा रही है। भारतीय रिजर्व बैंक से अब यह अपेक्षा की जा रही है कि वे रेपो दर में कम से कम 25 अथवा 50 आधार बिंदुओं की कमी तो अवश्य करेंगे। क्योंकि, पिछले लगातार लगभग 24 माह तक रेपो दर में कोई भी परिवर्तन नहीं करने के चलते मध्यमवर्गीय परिवारों द्वारा मकान निर्माण एवं चार पहिया वाहन आदि खरीदने हेतु बैंकों से लिए गए ऋण की किश्त की राशि का बोझ बहुत अधिक बढ़ गया है। बैंकों से लिए गए इस प्रकार के ऋणों एवं माइक्रो फाइनैन्स की किश्तों की अदायगी में चूक की घटनाएं भी बढ़ती हुई दिखाई दे रही हैं। अब मुद्रा स्फीति की दर खाद्य पदार्थों (फलों एवं सब्जियों आदि) के कुछ महंगे होने के चलते ही उच्च स्तर पर आ जाती है जबकि कोर मुद्रा स्फीति की दर तो अब नियंत्रण में आ चुकी है। खाद्य पदार्थों की मंहगाई को ब्याज दरों को उच्च स्तर पर बनाए रखकर कम नहीं किया जा सकता है। अतः भारतीय रिजर्व बैंक को अब इस ओर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। वित्तीय वर्ष 2024-25 की प्रथम तिमाही में सम्पन्न हुए लोक सभा चुनाव के चलते देश में पूंजीगत खर्चों में कमी दिखाई दी है। इसीलिए अब लगातार यह मांग की जा रही है कि देश में वन नेशन वन इलेक्शन कानून को शीघ्र ही लागू किया जाना चाहिए क्योंकि बार बार देश में चुनाव होने से केंद्र एवं राज्य सरकारों द्वारा आचार संहिता के लागू होने के चलते अपने बजटीय खर्चों को रोक दिया जाता है जिससे देश का आर्थिक विकास प्रभावित होता है।

अतः वित्तीय वर्ष 2025-26 के लिए लोक सभा में पेश किए जाने वाले बजट में पूंजीगत खर्चों को बढ़ाने पर गम्भीरता दिखाई जाएगी। हालांकि वित्तीय वर्ष 2022-23 के बजट में 7.50 लाख करोड़ रुपए के पूंजीगत खर्चों का प्रावधान किया गया था, वित्तीय वर्ष 2023-24 के बजट में 10 लाख करोड़ रुपए एवं वित्तीय वर्ष 2024-25 के बजट में 11.11 लाख करोड़ रुपए के पूंजीगत खर्चों का प्रावधान किया गया था। अब वित्तीय वर्ष 2025-26 के लिए कम से कम 15 लाख करोड़ रुपए के पूंजीगत खर्चों का प्रावधान किये जाने की सम्भावना व्यक्त की जा रही है। इससे देश में धीमी पड़ रही आर्थिक गतिविधियों को तेज करने में सहायता मिलेगी और रोजगार के करोड़ों नए अवसर भी निर्मित होंगे, जिसकी वर्तमान समय में देश को अत्यधिक आवश्यकता भी है।

अवमानक खोवा का संग्रहण एवं विक्रय करने पर सरावगी कमीशन एजेंट पर 20 हजार रुपये का जुमार्ना अधिरोपित

अपर कलेक्टर ने खाद्य सुरक्षा और मानक अधिनियम 2006 के तहत की कार्यवाही

कटनी। कलेक्टर दिलीप कुमार यादव के निर्देश पर जिले में चलाये जा रहे मिलावट से मुक्ति अभियान के तहत जिला प्रशासन द्वारा कार्यवाही का सिलसिला सतत रूप से जारी है। जिसमे प्रतिष्ठानों को सील करने, लाइसेंस व पंजीयन निलंबित करने सहित दांडिक कार्यवाही निरंतर जारी की जा रही है। इसी क्रम में न्याय निर्णायक अधिकारी व अतिरिक्त जिला दण्डाधिकारी श्रीमती साधना कमलकांत परस्ते द्वारा अवमानक खाद्य पदार्थ लूज खोवा का संग्रहण और विक्रय करने पर सिल्वर टॉकीज रोड स्थित सरावगी कमीशन एजेंट के संचालक गिरीश कुमार सरावगी पिता वृन्दावन सरावगी निवासी जालपा देवी वार्ड पर खाद्य सुरक्षा और मानक अधिनियम 2006 के नियमों एवं प्रावधानों के तहत 20 हजार रुपये का अर्थदंड अधिरोपित किया गया है।

यह है प्रकरण

खाद्य सुरक्षा अधिकारी ओम प्रकाश साहू द्वारा 6 मार्च 2023 को खाद्य प्रतिष्ठान सरावगी कमीशन एजेंट के निरीक्षण के दौरान मौके पर विक्रय हेतु खाद्य सामग्री खोवा अलग- अलग डलियों में संग्रहण कर रखा जाना पाया गया। निरीक्षण के दौरान खोवे की गुणवत्ता में शंका होने पर खोवे का नमूना जाँच हेतु लिये जाने की सम्पूर्ण कार्यवाही की जाकर संक्षिप्त पंचनामा बनाया गया तथा पढ़कर सुनाया गया व सही होने पर विक्रेता तथा गवाह के हस्ताक्षर कराये गए। अभिहित अधिकारी खाद्य एवं

औषधि प्रशासन द्वारा खोवे के नमूने का जाँच प्रतिवेदन संलग्न कर सूचित किया कि उक्त नमूना मिथ्याछाप है। कार्यालय अभिहित अधिकारी, खाद्य एवं औषधि प्रशासन द्वारा नमूने के जांच प्रतिवेदन की प्रति प्रेषित करते हुए खाद्य कारोबार कर्ता को खाद्य सुरक्षा एवं मानक अधिनियम 2006 की धारा एवं नियम के तहत खोवे के नमूने के एक भाग को निर्दिष्ट प्रयोगशाला में जांच विश्लेषण हेतु भेजे जाने की अपील किये जा सकने के संबंध में सूचित किया गया। प्रकरण में खाद्य कारोबार कर्ता द्वारा किया गया उल्लंघन केवल जुमार्ना से दंडित है। अभिहित अधिकारी द्वारा प्रकरण में आवश्यक विवेचना कर संबंधित आरोपियों के विरुद्ध समस्त मूल तथा अन्य दस्तावेज अभियोजन की अनुशंसा हेतु प्रस्तुत करने के निर्देश दिए गए। जिसपर कार्यालय अभिहित अधिकारी द्वारा उक्त अभियोजन स्वीकृति आदेश प्रेषित करते हुये प्रकरण को सक्षम न्यायालय में प्रस्तुत करने हेतु आदेशित किया गया। प्रकरण पंजीबद्ध कर अनावेदक को सुनवाई हेतु आहूत किये जाने पर अनावेदक द्वारा उपस्थित होकर अपने जवाब में जानकारी के अभाव में उक्त खोवा का विक्रय किया जाना स्वीकार किया जाकर उनके द्वारा किसी भी तरह की मिलावट खाद्य सामग्री का विक्रय नहीं किये जाने की बात कही जाकर क्षमा मांगते हुए भविष्य में उनके द्वारा ऐसे खाद्य पदार्थ का विक्रय नहीं करने का अनुरोध किया गया। प्रकरण में संलग्न दस्तावेजों का परीक्षण करने एवं प्रयोगशाला के नमूने के जांच प्रतिवेदन अनुसार लूज खोवे का नमूना अवमानक पाये जाने पर अनावेदक को दोषी पाये जाने पर खाद्य सुरक्षा अधिनियम 2006 का उल्लंघन होने पाये जाने पर दंड का भागीदार पाया गया। उपरोक्त तथ्यों को दृष्टिगत रखते हुए न्याय निर्णायक अधिकारी एवं अपर कलेक्टर श्रीमती साधना परस्ते द्वारा अनावेदक सिल्वर टॉकीज रोड स्थित सरावगी कमीशन एजेंट के संचालक गिरीश कुमार सरावगी पिता वृन्दावन सरावगी निवासी जालपा देवी वार्ड को मिथ्याछाप खाद्य पदार्थ खोवे का संग्रहण एवं विक्रय किए जाने के कारण राशि 20 हजार रुपये के आर्थिक दंड से दंडित किया गया है। अनावेदक को उपरोक्त अर्थदंड की राशि निर्धारित ट्रेजरी चालान के माध्यम से तीस दिवस के भीतर जमा कर चालान की प्रति अतिरिक्त जिला दंडाधिकारी न्यायालय में प्रस्तुत करनी होगी। अन्यथा की दशा में खाद्य सुरक्षा एवं मानक अधिनियम के प्रावधानों के तहत कार्यवाही की जायेगी।

सीएम राइज शासकीय मॉडल उच्चतर माध्यमिक विद्यालय कटनी में करियर मेला संपन्न

कटनी। कक्षा 10वीं एवं 12वीं में अध्यनरत विद्यार्थियों को विभिन्न क्षेत्रों में अवसरों की जानकारी प्रदान करनें तथा विद्यार्थियों को बेहतर करियर विकल्प के बारे में जानकारी देने के उद्धेश्य से कलेक्टर श्री दिलीप कुमार यादव के निर्देश पर गुरूवार 30 जनवरी को सीएम राइज शासकीय मॉडल उच्चतर माध्यमिक विद्यालय कटनी में करियर मेला का आयोजन किया गया। करियर मेले में विद्यार्थियों को विभिन्न क्षेत्रों में अवसरों की जानकारी दी गई विद्यार्थियों ने बड़े ही उत्साह के साथ विशेषज्ञों के मार्गदर्शन को सुना तथा उनसे प्रश्न पूछे कार्यक्रम का संचालन सुशील कुमार सोनी द्वारा किया गया। करियर मेले के दौरान जिला शिक्षा अधिकारी पी पी सिंह, विकासखंड शिक्षा अधिकारी, सुश्री धनश्री जैन, प्राचार्य अजय शंकर पांडे सहित विषय विशेषज्ञ विधिक क्षेत्र से अमरेंद्र कुमार तिवारी सहायक जिला अभियोजन अधिकारी, पुलिस सुरक्षा क्षेत्र से नवीन नामदेव टीआई रंगनाथ थाना ,पत्रकारिता क्षेत्र से राजेंद्र राठौर पत्रकार दैनिक भास्कर, आर्ट एंड क्राफ्ट क्षेत्र से बलविंदर कौर शिक्षिका, क्रीडा क्षेत्र से राज किशोर पटेल खेलकूद शिक्षक, साहित्य क्षेत्र से राजाराम अवस्थी शिक्षक ,करियर काउंसलर डॉक्टर धीरेंद्र कुमार अग्रवाल आदि की उपस्थिति रही।

49 हजार 828 कृषकों से 4.11 लाख मीट्रिक टन से अधिक धान उपार्जित

कृषकों को उपार्जित धान का किया गया 825.21 करोड़ रुपए का भुगतान

कटनी। कलेक्टर श्री दिलीप कुमार यादव के निर्देश पर खरीफ विपणन वर्ष 2024-25 में समर्थन मूल्य पर जिले में 89 उपार्जन केन्द्रों के माध्यम से धान उपार्जन का कार्य किया जा रहा है। जिला आपूर्ति अधिकारी ने बताया कि जिले में 31 जनवरी तक 49 हजार 828 पंजीकृत कृषकों में से 4 लाख 11 हजार 837 मीट्रिक टन धान का उपार्जन किया जा चुका है जो विगत वर्ष की खरीदी का 103.51 फीसदी है। वहीं कृषकों को अब तक उपार्जित धान का 825.21 करोड़ रुपये का भुगतान भी इस अवधि में किया जा चुका है। कुल उपार्जित धान में से 96 फीसदी धान का परिवहन भी अब तक कर लिया गया है। जिले में

उपार्जन कार्य के दौरान गोदाम स्तरीय 17 उपार्जन केन्द्रों से 73 हजार 88 मीट्रिक टन धान का उपार्जन किया जाकर शत प्रतिशत धान का परिवहन भी किया जा चुका है। जबकि समिति स्तरीय 72 उपार्जन केन्द्रों से 3 लाख 38 हजार 749 मीट्रिक टन धान का उपार्जन किया जाकर 3 लाख 28 हजार 553 मीट्रिक टन लगभग 97 फीसदी धान का परिवहन किया जा चुका है। जिले में अब तक 3 लाख 82 हजार 154 मीट्रिक टन के स्वीकृति पत्रक भी जारी किये जा चुके है। वहीं 50 हजार 676 कृषकों द्वारा स्लॉट की बुकिंग कराई गई है।

महिलाओं के सशक्तिकरण एवं समग्र विकास हेतु बाल विकास परियोजना सेक्टर क्रमांक-1 में दिया गया प्रशिक्षण

वूमन हेल्पलाइन, वन स्टाप सेंटर, शक्ति सदन, चाइल्ड हेल्पलाइन की दी गई जानकारी

कटनी। मिशन शक्ति उपयोजना सामर्थ्य अंतर्गत डिस्ट्रिक्ट हब फॉर एम्पावरमेंट ऑफ वूमेन के तहत महिलाओं के सशक्तिकरण एवं विकास हेतु परामर्श, सेवा एवं सहायता प्रदान करने के उद्देश्य से प्रशिक्षण का आयोजन किया गया। यह प्रशिक्षण जिला कार्यक्रम अधिकारी एवं नोडल अधिकारी डिस्ट्रिक्ट हब महिला एवं बाल विकास कटनी के दिशा निर्देश में बाल विकास परियोजना कटनी शहरी के सेक्टर क्रमांक-1 में किया गया। प्रशिक्षण का उद्धेश्य महिलाओं में आर्थिक, सामाजिक एवं व्यैक्तिक विकास करना था। जिला कार्यक्रम अधिकारी महिला एवं बाल विकास श्री नयन सिंह ने बताया कि प्रशिक्षण में मास्टर ट्रेनर के रूप में श्रीमती श्रुति मिश्रा, पर्यवेक्षक द्वारा आंगनवाड़ियों के सर्वे क्षेत्र की महिलाओं व लाड़ली बहना महिलाओं, शौर्यदल के सदस्य महिलाओं को हब फॉर इम्पॉवरमेंट ऑफ वूमेन की समस्त जानकारियों को साझा किया गया। महिलाओं के सशक्तिकरण एवं उनकी समाज में भूमिका के महत्व के साथ-साथ वूमन हेल्पलाइन, वन स्टाप सेन्टर, शक्ति सदन, चाइल्ड हेल्पलाइन इत्यादि जानकारियां साझा की गयी। महिलाओं और बच्चों की सुरक्षा के लिए कानूनों पर जागरूकता

अभियान- मानव तस्करी, पॉक्सो, जे.जे. अधिनियनम, ब्लॉक स्तर पर महिला पुलिस स्टेशन की चर्चा, एवं कामकाजी महिलाओं का महिलाओं का कार्यस्थल पर लैंगिक उत्प्रीड़न अधिनियम के संबंध में जागरूकता अभियान चलाया गया। इस प्रकार डिस्ट्रिक्ट हब फॉर इम्पॉवरमेंट ऑफ वूमेन कटनी अंतर्गत चरणबद्ध रूप से पूरे जिले में महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए जागरूकता अभियान चलाया जाकर सामाजिक, आर्थिक रूप से महिलाओं को सशक्त बनाये जाने हेतु विभाग निरंतर प्रयासरत है।

और अन्य खेल स्पधाओं का आयोजन 5 फरवरी से

पावर जनरेटिंग कंपनी में जेनको क्रिकेट लीग

त्रिपुरी टाईम्स ● जबलपुर
www.tripuritimes.com

मध्यप्रदेश पावर जनरेटिंग कंपनी के तत्वावधान में जेनको क्रिकेट व अन्य खेलों का आयोजन 5 से 10 फरवरी तक रामपुर परिसर स्थित पाण्डुताल मैदान में किया गया है। इसमें पुरूष व महिलाओं की टेनिस बॉल क्रिकेट स्पर्धा और महिलाओं के लिए स्पून लेमन रेस व चेयर रेस का आयोजन होगा। स्पधाओं में पावर जनेरटिंग कंपनी के मुख्यालय स्थित सभी कार्यालयों के कार्मिक शामिल होंगे। प्रतियोगिता का उद्घाटन पावर जनरेटिंग कंपनी के प्रबंध संचालक मनजीत सिंह करेंगे। क्रिकेट लीग में 6 टीमों के बीच होगा मुकाबला-जेनको क्रिकेट लीग में पुरूष अभियंताओं व कार्मिकों की 6 टीमें रायल्स, लीजेन्ड्स, हिटर्स, वारियर्स, ग्लेडीएटर्स व चार्जर्स के मध्य मुकाबला होगा। महिला कार्मिकों की दो टीमें वंडर वुमेन्स व पावर एंजेल्स बनाई गई हैं जिनके मध्य मुकाबला होगा। जेनको क्रिकेट लीग में अधीक्षण अभियंताओं व इनसे उच्च पदों के कार्मिक की दो टीमें चेलेंजर्स व टाइटन भी क्रिकेट लीग में उतरेंगी। सुव्यवस्थित आयोजन के लिए समिति का गठन-जेनको क्रिकेट लीग व खेल स्पर्धा के सुव्यवस्थित आयोजन के लिए एक समिति गठित की गई है। इस समिति का अध्यक्ष संयुक्त सचिव अमन लूम्बा व सचिव उप महाप्रबंधक दीपक निगम को बनाया गया है। समिति के अन्य सदस्य हैं-लोकेश कुमार उपाध्याय, सुशील कुमार पाल, प्रशांत सिंह भदौरिया, विकास कुमार शुक्ला, विनीत त्रिपाठी, के. विनय राव, आनंद गुप्ता, अतुल यादव, कुशल जैन, सुहैल मोहम्मद, महेन्द्र कुमार सोनी, आदर्श कुमार तिवारी, अमित सिंह चौहान, राजकिशोर सिंह, विक्रम सिंह बनाफर, योगेश साहू व सुशील कुमार पाण्डेय। महिलाओं की खेल स्पधाओं के लिए प्रभारी स्मिता नवेरिया, स्मृति उपाध्याय, खुशबू शर्मा मनीषा झारिया बनाई गई हैं।

समरस समाज की स्थापना हेतु मजबूत ध्येय की आवश्यकता

यादें मां की जयंती के अवसर पर समरसता सेवा संगठन ने किया विचार गोष्ठी एवं सम्मान समारोह का आयोजन

त्रिपुरी टाईम्स ● जबलपुर
www.tripuritimes.com

समरस भारत - समर्थ भारत, सब सबको जाने - सब सबको माने, एक अभियान के अंतर्गत समरसता सेवा संगठन द्वारा यादे मां की जयंती अवसर पर मुख्य अतिथि रवि गुप्ता, अध्यक्ष महाकौशल चैंबर्स ऑफ कॉमर्स मुख्य वक्ता जानकी रमण महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ अभिजात कृष्ण त्रिपाठी समरसता सेवा संगठन के अध्यक्ष संदीप जैन एवं सचिव उज्ज्वल पचौरी की उपस्थिति में विचार गोष्ठी एवं सम्मान समारोह का आयोजन वर्मा बारातघर विजयनगर में किया गया। विचार गोष्ठी को संबोधित करते हुए मुख्य वक्ता डॉ अभिजात कृष्ण त्रिपाठी ने कहा कि समरस समाज के मजबूत स्थापन हेतु मजबूत ध्येय की आवश्यकता होती है जो समरसता सेवा संगठन के कार्यों से प्रतीत होता है समाज की प्रत्येक पंक्ति के हर व्यक्ति को, हर जाति को भारत के नवनिर्माण के प्रति अग्रेषित करना समरसता का भाव सभी के मन में जागृत करना ताकि सक्षम एवं समर्थ भारत का निर्माण हो सके यही समस्या सेवा संगठन का प्रमुख उद्देश्य है कालांतर में महापुरुषों एवं महादेवियों के द्वारा दिए गए विचारों को मानव समाज को आत्मसात करने हेतु समरसता सेवा संगठन कार्य कर रहा है एवं कालांतर में हुई विसंगतियों को दूर करते हुए सभी को एक माला में पिरोने का प्रयास अद्वितीय है। उन्होंने कहा श्री यादें मां जो कुमार एवं प्रजापति समाज की मुख्य आराध्या हैं उन्हें भक्त प्रहलाद की भी आराध्य देवी माना जाता है एवं यह भी माना जाता है कि श्रीयादे मां की विष्णु भक्ति से प्रेरणा लेकर ही भक्त प्रहलाद ने भगवान विष्णु की भक्ति प्रारंभ की। विचार गोष्ठी को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि रवि गुप्ता ने कहा सनातन संस्कृति में मानव एक है परन्तु वह अपने कार्य की विशेषता के आधार पर इतना पारंगत हो गया कि उसका कार्य उसकी जाति में परिवर्तित हो गया एवं मनुष्य कार्य के आधार पर दी गई जाति समाज में स्थापित हुई परन्तु समयानुसार जाती के कारण विसंगति एवं भेद उत्पन्न हो हुए जिसमें समाज एवं जाती के आधार पर मानव को बांट दिया गया यह भेद नष्ट करने के उद्देश्य से समरसता सेवा संगठन कार्य कर रहा है और मजबूत एकत्व को आगे बढ़ाने हेतु प्रतिबद्ध है। कार्यक्रम की प्रस्तावना एवं स्वागत उद्बोधन संगठन के अध्यक्ष संदीप जैन ने कहा आप सभी के सहयोग और स्नेह से समरसता सेवा संगठन प्रयासरत है कि मानव जाति में एकरूपता स्थापित हो सभी महापुरुषों के विचार हर व्यक्ति एवं समाज अपने मन में लेकर भारत की शक्ति को और अधिक मजबूत करे और समरस भारत से समर्थ भारत के निर्माण के उद्देश्य को लेकर समरसता सेवा संगठन चल रहा है, सब सबको जाने और सब सबको माने के भाव से हम कार्य कर रहे है, इसी तारतम्य में आज यादे मां की जयंती के अवसर पर विचार गोष्ठी और सम्मान समारोह के आयोजन पर आप सभी का स्वागत करता हूं। कार्यक्रम में संगठन वक्ता के रूप में श्री अरुण अग्रवाल ने श्री यादे मां पर अपने विचार व्यक्त किए। इनका हुआ सम्मान : कार्यक्रम में राजू चक्रवर्ती, दुर्गा बाबू प्रजापति, रमेश प्रजापति, गंगाराम चक्रवर्ती, प्रकाश चक्रवर्ती, प्रहलाद प्रजापति, रानू प्रजापति, अक्षय चक्रवर्ती, विजय प्रजापति, यशवंत प्रजापति, विमल चक्रवर्ती, नारायण प्रजापति एवं मिठाईलाल चक्रवर्ती का सम्मान किया गया। कार्यक्रम का संचालन शरद ताम्रकार एवं आभार संगठन के सचिव उज्ज्वल पचौरी ने व्यक्त किया।

यह रहे उपस्थित :

कार्यक्रम में शरदचंद्र पालन, जीपी सिंह, ओंकार रजक, हीरालाल चक्रवर्ती, अभिमन्यु जैन, आशुतोष दीक्षित, सुरेश विचित्र, महेश स्थापक, संदीप अग्रवाल, भीष्म सिंह राजपूत, रवि सक्सेना, राजेश तिवारी, विजय मिश्रा, पुष्पेंद्र सिंह, सुनील सराठे, शैलेष अग्रवाल, उदयभानु तिवारी, अनिल गुप्ता, विशाल वर्मा, अनिल जैन, अनमोल बाजपेई, सुजीत पटेल आदि उपस्थित थे।

बिल्डर शंकर मनचानी के खिलाफ गिरफ्तारी वारंटी जारी

उखरी रोड स्थित मुस्कान प्लाजा की जमीन मालिकों के साथ की थी धोखाधड़ी

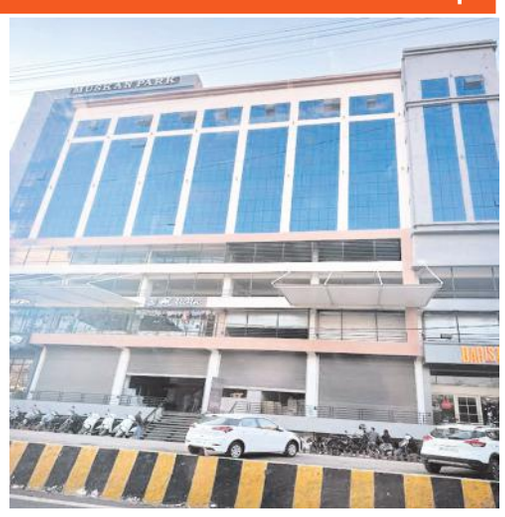

त्रिपुरी टाईम्स ● जबलपुर
www.tripuritimes.com

जबलपुर के उखरी चौक के पास मुस्कान प्लाजा बना हुआ है। इसके मालिक शंकर मनचानी के खिलाफ गिरफ्तारी वारंट जारी हो गया है। टी आई ओमती राजपाल सिंह बघेल ने जानकारी देते हुए बताया कि जमीन मालिक राजकुमार बुधरानी का बिल्डर शंकर मंचानी और शोभा यादव के बीच कोई जमीन को लेकर एग्रीमेंट हुआ था। जिसमें शंकर मंचानी ने दस्तावेजों से छेड़खानी करते हुए करोड़ों की धोखाधड़ी किया, इस बात की शिकायत राजकुमार ने की थी जिसकी जांच की गई, तथ्य सही पाए गए। शंकर मंचनी के खिलाफ अपराध पंजीबद्ध किया गया है, गिरफ्तारी वारंट जारी हो गया है, तलाश की जा रही है।
वही राजकुमार ने बताया कि अक्टूबर 2003 में मैं शंकर मंचानी के खिलाफ दस्तावेजों से छेड़छाड़ कर करोड़ों की धोखाधड़ी की शिकायत ओमती थाना मे की थी। जिस पर जांच कर मामला कायम कर गिरफ्तार वारंट जारी किया गया है।

2 फोर व्हीलर से 52 किलो गांजा जप्त

त्रिपुरी टाईम्स ● जबलपुर
www.tripuritimes.com

जबलपुर के कंडोम थाना क्षेत्र मेंपुलिस ने कार्रवाई करते हुए 52 किलो गांजा जप्त किया है। कंडोम थाना प्रभारी अनूप नामदेव ने बताया कि मुखबिर की सूचना पर अपने स्टाफ के साथ घेराबंदी करके चौरई के पास से 2 फोर व्हीलर को पकड़ा, जिसकी तलाशी लेने पर 52 किलो 3 सो 37 ग्राम मादक पदार्थ गांजा पकड़ा गया। दोनों फोर व्हीलर वाहन में चार व्यक्ति सवार थे यह मादक पदार्थ बेचने वाले व्यक्ति बिलासपुर के बताये जा रहे हैं। सिहोरा की तरफ जा रहे थे मुखबिर की सूचना इतनी तगड़ी थी कि आरोपी भागने का प्रयास कर रहे थे परंतु कुंडम टी आई ने अपनी सूझबूझ के साथ अपने दल को लेकर घेराबंदी करके अपराधियों को दबोच दिया कार्यवाही करते हुए बताया कि यह अपराधी बिलासपुर के बताए जा रहे हैं दोनों गाड़ियों में दो दो व्यक्ति बैठे हुए थे निवास रोड शाहपुरा रोड और सदाफल मोड में पुलिसवल को तैनात किया गया था।

यूरोप से 1.3 गुणा बड़ा है अंटार्कटिका

अंटार्कटिका महाद्वीप के बारे में जानने की उत्सुकता स्वभाविक है.इसके बारे में जानना जैसे एक एक बीतते लम्हे को महसूस करने जैसा है.

- अंटार्कटिका में कुछ जगह ऐसी भी है जहाँ पिछले 20 लाख साल से ना तो बर्फ पड़ी और ना ही बारिश हुई.
- अंटार्कटिका 1.3 गुणा बड़ा हैं Europe से.
- अंटार्कटिका दुनिया का सबसे बड़ा धुर्वीय रेगिस्तान हैं.
- अंटार्कटिका का 1% से भी कम हिस्सा ऐसा भी हैं जिस पर कभी बर्फ नही पड़ी.
- अगर आपको अंटार्कटिका में काम करना है, तो सबसे पहले आपको अपने दांत और अपेंडिक्स को निकलवाना पड़ेगा, भले ही वो एकदम स्वस्थ ही क्यों न हों.
- आज तक अंटार्कटिका में सबसे ज्यादा तापमान 58.2°F (14.5°C) रिकॉर्ड किया गया हैं.
- करीब 53 लाख साल पहले अंटार्कटिका बहुत गर्म स्थान था, इतना गर्म कि इसके किनारों पर खजूर के पेड़ आसानी से उग जाते थे.यहां का तापमान उस टाइम 20°F से ज्यादा ही रहता था.
- दुनिया का सबसे शुष्क स्थान है अंटार्कटिका इतना ही नहीं पृथ्वी (गृह) का सबसे शुष्क स्थान भी अंटार्कटिका में ही है, जिसे Dry Valleys कहा जाता हैं.
- अंटार्कटिका में एक Nuclear Power Station भी है जिसका नाम है McMurdo Station. यह पावर स्टेशन स्टेशन 1962 से यहां चल रहा हैं.
- अंटार्कटिका में आपको एक भी Polar Beer नही मिलेगा.ये सिर्फ Arctic में मिलेंगे.
- 21 जुलाई, 1983 में अंटार्कटिका पर अभी तक का धरती का सबसे कम तापमान −128.56°F रिकॉर्ड किया गया था.
- अंटार्कटिका की बर्फ की औसतन मोटाई लगभग 1.6 किलोमीटर हैं.और धरती का 90% साफ पानी यही पर हैं लेकिन बर्फ के रूप में.
- आपको शायद यकीन ना हों लेकिन अंटार्कटिका में एक ATM भी हैं.
- आज तक पाए गए 90% उल्कापिंड अंटार्कटिका से आए हैं.
- अंटार्कटिका में कुछ जगहों पर 320 KM/H की स्पीड से हवा चलती हैं.
- नार्वे के Roald Amundsen पहले आदमी थे, जो सबसे पहले दक्षिण ध्रुव तक पहुंच पाये थे.
- अंटार्कटिका के अस्तित्व के बारे में किसी को पता न चलता, अगर 1820 में इस महाद्वीप को देखा न जाता. पहले लोगों को लगता था कि यह सिर्फ द्वीपों का एक समूह हैं.
- धरती पर केवल अंटार्कटिका ही ऐसा महाद्वीप हैं, जहाँ साँप बिल्कुल ही नही पाए जाते.
- अंटार्कटिका ही केवल ऐसा महाद्वीप हैं जहाँ कोई टाईम जोन नही हैं.
- 1994 के बाद Husky Dogs को अंटार्कटिका से बैन कर दिया था.
- जनवरी 1979 में Emile Marco Palma दुनिया के सबसे आखिरी दक्षिणीछोर पर जन्म लेने वाली पहली इंसान बनी.ये अर्जेंटीना द्वारा खुद को अंटार्कटिका का हिस्सा बनाने का एक प्रयास था.अर्जेंटीना ने एक गर्भवती औरत को यहां इसीलिए भेजा था.
- आज तक का सबसे पुराना Sperm अंटार्कटिका में मिला हैं.एक कीड़े का 50 Million साल पुराना स्पर्म.

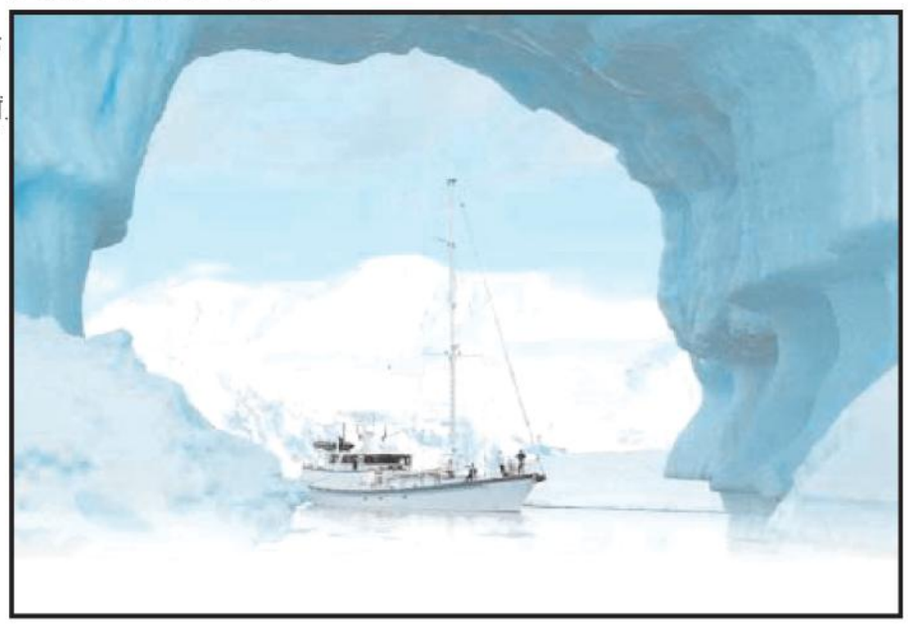

इन्हें अपनाओ और बन जाओ ईको-फ्रेंडली चाइल्ड

गर्मियों में जब तक काफी गर्मी न लगे तब तक एयरकंडीशनर की जगह पंखे से काम चलाओ। एसी चलाने से बिजली की खपत काफी तेजी से बढ़ती है। अपने कमरे में ज्यादा चमकदार बल्ब लगवाने की जिद मत करो। फ्ल्यूरोसेंट बल्ब चमकने वाले बल्बों से दस गुणा ज्यादा चलते हैं और उनसे एक चौथाई कम पावर खींचते हैं। अगर तुम्हारे मम्मी-पापा ज्यादा बिजली खींचने वाले बल्बों का इस्तेमाल कर रहे हों तो तुम उन्हें समझा सकते हो।

बात समझ में आई

स्कूल से लौटते हुए हिमांशु उदास था। उसने रास्ते भर अपने दोस्तों से बात भी नहीं की। घर पहुंचने पर उसने बस्ते को स्टडी टेबल पर रखकर जूते उतारे और पलंग पर जाकर लेट गया। मां ने भी इस बात को नोटिस किया कि कुछ तो है, जिसकी वजह से हिमांशु उदास है, वरना रोज स्कूल से आने के बाद वह पूरे घर को सिर पर उठा लेता था। उन्होंने उसके सिर पर हाथ फेरते हुए पूछा, 'क्या हुआ? मेरा राजा बेटा उदास क्यों है?' 'कुछ नहीं मां, बस ऐसे ही।' 'ऐसे ही क्या? कुछ बात तो है, जो तुम इतना उदास हो।' मां ने कहा।

अब हिमांशु से रहा नहीं गया। उसने पलंग से उठते हुए कहा, 'मां, आज मेरी क्लास टीचर ने मुझे बिना गलती के डांटा।' 'क्यों?' मां ने पूछा। 'पता नहीं', हिमांशु बोला। 'जरूर कुछ हुआ होगा।' मां ने कहा। 'कुछ खास नहीं मां, बस जब मेरी क्लास टीचर ने सबसे पूछा कि किस-किस ने एनसीसी ट्रेनिंग कैंप में अपना नाम लिखवाया है, तो मुझे छोड़कर पूरी क्लास ने हाथ खड़े कर दिए। मैडम को यह बुरा लगा और उन्होंने मुझे डांट दिया।'

'उन्हें बुरा लगना भी चाहिए।' मां ने कहा। 'क्यों?' हिमांशु ने पूछा। 'बेटा, जितनी जरूरी पढ़ाई होती है, उतनी ही खेल और दूसरी चीजें भी होती हैं। लेकिन तुम्हें यह बात समझ ही नहीं आती।' यह कहकर मां पलंग से उठ गईं और हिमांशु से कहा, 'अच्छा अब उठ कर खाना खा लो।'

आठवीं क्लास में पढ़ने वाला हिमांशु पढ़ाई में होशियार था। क्लास में फर्स्ट आता था। सभी टीचर्स उसे बेहद पसंद करते थे। पसंद तो उसके दोस्त भी उसे करते थे, लेकिन सब उसे 'किताबी कीड़ा' कहते थे। हिमांशु स्कूल की खेलकूद जैसी दूसरी गतिविधियों से तब तक दूर ही रहता था, जब तक टीचर का आदेश न हो। उसे लगता था कि इतने समय में तो वह पढ़ाई करके और भी ज्यादा नंबर ले आएगा। स्कूल से आने के बाद भी वह सारा दिन घर पर ही रहता था। मां उसे बाहर जाकर खेलने के लिए कहतीं तो उसका जवाब होता, 'मां अभी मैं पढ़ रहा हूं।' मां और पिताजी उसकी इस आदत से परेशान थे। वे उसे अक्सर समझाते कि बेटा, पढ़ाई-लिखाई के साथ-साथ दूसरी चीजें, जैसे खेलकूद, सुबह खुली हवा में घूमना भी जरूरी है। इससे सेहत ठीक रहती है। लेकिन इन बातों का उस पर कोई असर नहीं होता था।

एक दिन क्लास में टीचर ने बताया कि अगले सोमवार को सब बच्चे एक हफ्ते की छुट्टी पर शिमला जा रहे हैं। इस टूर पर सभी को जाना है, इसलिए किसी को छुट्टी नहीं मिलेगी। हिमांशु को छोड़कर सभी बच्चे खुश थे। उसे लग रहा था कि इससे उसका समय बरबाद होगा। घर आकर उसने मां को यह बात बताई, तो वह बहुत खुश हुईं कि चलो इस बहाने यह कुछ घूमेगा तो सही। पता ही नहीं चला कि हफ्ता किस तरह बीत गया। सोमवार का दिन भी आ गया। मां ने शिमला जाने के लिए हिमांशु की पूरी तैयारी कर दी थी। कपड़ों के अलावा कुछ खाने-पीने का सामान भी साथ रख दिया था। स्कूल पहुंचने पर हिमांशु ने देखा कि बस तैयार खड़ी थी। टीचर्स के कहने पर एक-एक करके सभी बच्चे बस में बैठ गए। थोड़ी देर में टीचर्स भी आ गए। बस शिमला के लिए चल दी।

शिमला पहुंचकर बच्चों ने खूब मजा किया। सभी के ठहरने का इंतजाम एक गेस्ट हाउस में था, जो शहर से थोड़ी दूर एक बहुत ही खूबसूरत जगह पर था। मौज-मस्ती में पता ही नहीं चला कि किस तरह तीन दिन बीत गए। यहां आकर अब हिमांशु को भी अच्छा लगने लगा था। उसने इतनी हरियाली और खूबसरत पहाड़ियां आज तक नहीं देखी थीं। देखता भी कैसे, उसे तो पढ़ाई के अलावा सब चीजें बेकार लगती थीं। लेकिन यहां की खूबसूरती देखकर उसका मन बदलने लगा था।

शाम को जब सब घूमकर गेस्ट हाउस लौट रहे थे तो अचानक बारिश शुरू हो गई। वे सब किसी तरह बचते-बचाते गेस्ट हाउस पहुंचे, लेकिन तब तक वे काफी भीग चुके थे। सभी ने अपने-अपने कमरों में जाकर कपड़े बदले और डिनर के लिए तैयार होकर डाइनिंग हॉल में पहुंच गए। खाना खाकर सब सो गए। सुबह उठने पर बच्चे यह देखकर चौंक गए कि बारिश तो अभी भी हो रही है। क्या बारिश पूरी रात होती रही! तभी उनके पास गेस्ट हाउस का रसोइया आया और कहने लगा, 'यहां तो अकसर कई-कई दिनों तक लगातार बारिश होती है। चलो, जल्दी से हाथ-मुंह धोकर तैयार हो जाओ, नाश्ता भी तैयार है।' रसोइए की बात सुनकर सब बच्चे फ्रेश होने के लिए चले गए। नाश्ते की टेबल पर सभी टीचर्स और बच्चों को एक ही चिंता थी कि अगर बारिश नहीं रुकी तो वे घूमने कैसे जाएंगे, क्योंकि इतनी भारी बारिश में बच्चों के साथ कहीं बाहर नहीं जाया जा सकता। इस लगातार बारिश ने सभी के चेहरों पर उदासी ला दी थी। सबसे आश्चर्य की बात तो यह थी कि घूमने-फिरने, खेलने-कूदने में कोई दिलचस्पी न रखने वाला हिमांशु सबसे ज्यादा उदास था।

तीन दिन लगातार बारिश होती रही। शनिवार शाम बारिश रुकी भी तो काफी देर हो चुकी थी। अगले दिन सुबह रविवार था, यानी उनकी वापसी का दिन। उस दिन सुबह आसमान में धूप खिली हुई थी। हिमांशु को ऐसा लगा कि यह धूप मुंह चिढ़ाकर कह रही हो, 'बच्चू, तुम्हें तो यहां आने में कोई दिलचस्पी ही नहीं थी। फिर हरी-भरी वादियों में घूम न पाने के कारण क्यों उदास हो?' हिमांशु चौंका। उसने देखा कि उसकी टीचर उसे बस में चढ़ने के लिए पुकार रही हैं। वह दौड़कर बस के पास गया। उसने टीचर की ओर देखा और कहा, 'मैडम, क्या हम यहां दोबारा घूमने नहीं आ सकते?'

उसके इस सवाल पर मैडम चौंक उठीं। उन्हें लगा, क्या यह वही हिमांशु है, जो कहीं भी घूमने-फिरने के नाम से कतराता है। अचानक इसमें यह बदलाव कैसे आ गया? उन्होंने उसकी ओर देखा और कंधे पर हाथ रखते हुए कहा, 'हां क्यों नहीं? लेकिन इसके लिए जरूरी है कि हम पहले वापस लौटें।' यह कहकर मैडम मुस्कुरा दीं और हिमांशु भी।

एवेंजर्स – एंडगेम निर्देशक के साथ दोबारा जुड़े रणदीप हुड्डा

बॉलीवुड अभिनेता रणदीप हुड्डा एक बार फिर हॉलीवुड फिल्म में नजर आने वाले हैं। अभिनेता दोबारा एप्पल ओरिजिनल फिल्म्स की आगामी एक्शन थ्रिलर मैचबॉक्स में निर्देशक सैम हार्ग्रेव के साथ काम करने के लिए तैयार हैं। इस फिल्म में जॉन सीना भी हैं। इससे पहले उन्होंने निर्देशक के साथ साल 2020 में नेटफ्लिक्स एक्सट्रैक्शन में काम किया था। रिपोर्ट के मुताबिक लाइव-एक्शन फिल्म, जो मैटल की लोकप्रिय मैचबॉक्स टॉय व्हीकल लाइन से प्रेरित है में हॉलीवुड सितारे टेयोना पैरिस, जेसिका बील और सैम रिचर्डसन भी होंगे। मौजूदा समय में फिल्म का प्रोडक्शन बुडापेस्ट में चल रहा है। फिल्म का निर्देशन एवेंजर्स एंडगेम और एक्सट्रैक्शन 2 के निर्देशक हार्ग्रेव कर रहे हैं।

क्या है फिल्म की कहानी?

यह फिल्म मशहूर मैचबॉक्स कार लाइन पर आधारित है, जिसकी शुरुआत 1953 में हुई थी जब जैक ओडेल ने अपनी बेटी के लिए माचिस की डिब्बी में फिट होने लायक एक खिलौना बनाया था। मैटल ने रिपोर्ट की है कि दुनिया भर में हर सेकंड दो मैचबॉक्स कारें बिकती हैं।

हार्ग्रेव के साथ काम करने को उत्साहित हैं हुड्डा

वैरायटी के मुताबिक रणदीप हुड्डा ने हार्ग्रेव के साथ फिर से काम करने को लेकर अपना उत्साह जताया है। अभिनेता ने कहा, सैम के साथ फिर से काम करने को लेकर उत्साहित हूं। 'एक्सट्रैक्शन' में काम करते हुए हमने एक अच्छा समय साथ में बिताया। सैम हाई-ऑक्टेन स्टोरीटेलिंग और एक्शन के मास्टर हैं। बुडापेस्ट में टीम में शामिल होने पर खुशी है।

रणदीप हुड्डा का वर्क फ्रंट

रणदीप हुड्डा के वर्क फ्रंट की बात करें तो उनके पास कई रोमांचक प्रोजेक्ट हैं। उन्होंने हाल ही में स्वातंत्र्य वीर सावरकर का निर्देशन और अभिनय किया। उनके आगामी कार्यों में सनी देओल अभिनीत और गोपीचंद मलिनेनी द्वारा निर्देशित जाट है। रिपोर्ट्स के मुताबिक वह विशाल भारद्वाज द्वारा निर्देशित अर्जुन उस्तरा से भी जुड़े हुए हैं।

12वीं फेल के बाद अब कॉमेडी करती दिखेंगी मेधा शंकर

निम्रत-सनी भी साथ आएंगे नजर

सनी कौशल, निम्रत कौर और मेधा शंकर जल्द ही एक साथ एक फिल्म में नजर आने वाले हैं। बताया जा रहा है कि यह जासूसी कॉमेडी फिल्म होगी। यह पहला मौका होगा जब तीनों कलाकार एक साथ स्क्रीन साझा करेंगे। हाल ही में रोमांटिक थ्रिलर फिर आई हसीन दिलरुबा में अपनी अदाकारी से दर्शकों का ध्यान खींचने वाले सनी कौशल राजस्थान में अपनी इस फिल्म की शूटिंग शुरू कर चुके हैं।

कौन बना रहा फिल्म?

हालांकि इस फिल्म के बारे में सनी कौशल की तरफ से कोई जानकारी नहीं दी गई है। निर्माताओं की ओर से अब तक फिल्म को लेकर कोई भी आधिकारिक घोषणा नहीं की गई है। मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार इसे लक्ष्मण उतेकर और टी-सीरीज मिलकर बना रहे हैं।

फिर आई हसीन दिलरुबा से सनी ने खूब लूटी वाहवाही

साल 2024 में सनी ने फिर आई हसीन दिलरुबा में एक दिलचस्प भूमिका अदा की थी। फिल्म में उनके किरदार को दर्शकों ने खूब पसंद किया था। नेटफ्लिक्स की इस फिल्म में वह तापसी पन्नू और विक्रांत मैसी के साथ नजर आए थे। फिल्म में तापसी और विक्रम ने रानी कश्यप और ऋषभ के किरदारों को फिर से निभाया था।

इस फिल्म में दिखी थीं निम्रत कौर

निम्रत कौर की बात करें तो उन्हें हाल ही में सजनी शिंदे का वायरल वीडियो में देखा गया था। अब वह जल्द ही अपनी आगामी फिल्म सेक्शन 84 में नजर आएंगी, जिसमें वह अमिताभ बच्चन और डायना पेंटी के साथ स्क्रीन साझा करेंगी।

इसके अलावा निम्रत कौर जल्द ही स्काई फोर्स में नजर आ रही हैं। फिल्म में वह अक्षय कुमार के साथ आठ साल के बाद पर्दे पर नजर आ रही हैं।वीर पहाड़िया इस फिल्म से हिंदी फिल्म इंडस्ट्री में कदम रखने जा रहे हैं।

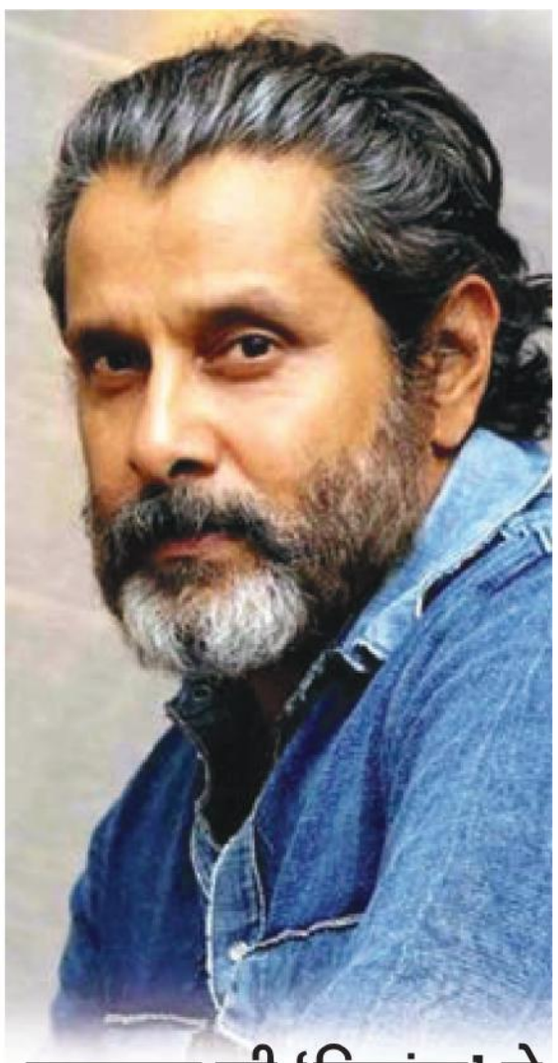

सलमान की 'सिकंदर' से टकराएगी चियान विक्रम की वीरा धीरा सूरन

साउथ अभिनेता चियान विक्रम की बहुप्रतीक्षित फिल्म 'वीरा धीरा सूरन' की रिलीज डेट से पर्दा उठ चुका है। बुधवार को निर्माताओं ने फिल्म की रिलीज डेट की घोषणा की। दिसंबर 2024 में फिल्म का टीजर जारी किया गया था। टीजर ने अभिनेता के फैंस की धड़कनों को तेज कर दिया था और उनकी उत्सुकता को भी बढ़ाया था।

इस दिन रिलीज होगी 'वीरा धीरा सूरन'

चियान विक्रम की मुख्य भूमिका वाली फिल्म 'वीरा धीरा सूरन' 27 मार्च, 2025 को सिनेमाघरों में रिलीज होगी। इस फिल्म का सामना बॉक्स ऑफिस पर सलमान खान की फिल्म 'सिकंदर' से होगा। इसके अलावा साउथ की 'लूसिफर 2', 'रॉबिनहुड' और 'मैड 2' भी सिनेमाघरों में रिलीज होंगी। ऐसे में फिल्म को कलेक्शन को लेकर काफी मुश्किलों का सामना करना पड़ सकता है। विक्रम अभिनीत इस फिल्म को 'पोंगल 2025' पर रिलीज क्या जाना था, लेकिन जब अजित की 'विदामुयार्ची' को त्योहार के लिए घोषित किया गया, तो 'वीरा धीरा सूरन' की तारीख बदल दी गई।

पोस्ट प्रोडक्शन में चल रही फिल्म

'वीरा धीरा सूरन' की शूटिंग पूरी हो चुकी है और इसका पोस्ट-प्रोडक्शन का काम फिलहाल जोरों पर है। फिल्म में चियान विक्रम के अलावा एसजे सूर्या, अभिनेत्री दुशारा विजयन और लोकप्रिय मलयालम अभिनेता सूरज वेंजरअमूडू सहित कई कलाकार शामिल हैं। फिल्म को तीन भाषाओं तमिल, तेलुगु और हिंदी में रिलीज किया जाएगा

चियान विक्रम का वर्क फ्रंट

साउथ अभिनेता चियान विक्रम को आखिरी बार समीक्षकों द्वारा प्रशंसित पीरियड ड्रामा फिल्म 'थंगालान' में देखा गया था। इसके बाद वह 'वीरा धीरा सूरन' में नजर आएंगे। फैंस उनकी इस फिल्म का लंबे समय से इंतजार कर रहे हैं।

अलग ढंग से फैंस के साथ बॉबी देओल ने मनाया जन्मदिन, आश्रम सीरीज के लिए एक्साइटेड नजर आए

बॉबी देओल ने जब से 'एनिमल' फिल्म में अबरार का रोल किया है, उनकी फैन फॉलोइंग काफी बढ़ गई है। एक्टर के कुछ फैंस ने 27 जनवरी को उनके घर के बाहर आकर बर्थ डे विश किया। साथ ही बर्थ डे सेलिब्रेशन भी अलग ही ढंग से किया। बॉबी देओल भी अपने फैंस से बड़े ही प्यार से मिलते हुए नजर आए। बॉबी देओल के कई फैंस उनके घर के बाहर एक्टर का जन्मदिन मनाने के लिए पहुंचे थे। घर के बाहर फैंस ने हैप्पी बर्थ डे सॉन्ग एक्टर के लिए गाया। साथ ही कुछ फैंस बॉबी देओल के लिए बड़ा सा केक और एक बड़ा सा लड्डू लेकर पहुंचे। केक और लड्डू को अपने बर्थ डे पर फैंस सामने एक्टर ने काटा। वह इस मौके पर काफी खुश नजर आए। केक काटने के बाद बॉबी देओल ने फैंस को इतना प्यार देने के लिए शुक्रिया कहा। साथ ही फैंस और पैपराजी के कहने पर बॉबी देओल ने फिल्म 'एनिमल' का एक सिग्नेचर सीन भी करके दिखाया। जब बॉबी ने फिल्म का सीन रिक्रिएट किया तो फैंस ने खूब तालियां बजाई।

अपनी वेब सीरीज 'आश्रम' के अगले सीजन का इंतजार है। वह अपनी इस सीरीज का एक डायलॉग जपनाम भी बोलते हुए देखे गए। इसी सीरीज में बॉबी का किरदार लड्डू खिलाकर, अपने भक्तों को वश में करता था। इसलिए फैंस बॉबी देओल के लिए बड़ा सा लड्डू बनाकर जन्मदिन पर लाए थे।

आश्रम सीरीज को लेकर दिया अपडेट

अपने जन्मदिन के मौके पर फैंस को बॉबी देओल ने बताया कि उन्हें

शहनाज गिल ने खुद को ही किया बर्थ डे विश, जन्मदिन पर दोस्तों-फैंस ने भी बरसाया प्यार

शहनाज गिल की सोशल मीडिया पर काफी अच्छी फैन फॉलोइंग है, उनका अपना अलग ही फैन बेस है। हाल ही में एक्ट्रेस ने अपने इंस्टाग्राम अकाउंट पर अपने बर्थ डे सेलिब्रेशन की कुछ फोटो शेयर की। इन तस्वीरों में वह केक काटते हुए, अपने दोस्तों के साथ सेलिब्रेशन के अंदाज में दिखी। शहनाज ने इंस्टाग्राम पर जन्मदिन मनाते हुए जो तस्वीर साझा की है, उसके साथ कैप्शन लिखा है- 'हैप्पी बर्थ टू मी'। वहीं शहनाज के दोस्तों और फैंस ने भी उन्हें जन्मदिन पर विश किया है। इन बर्थ डे विशेज को शहनाज के अपने इंस्टाग्राम अकाउंट के स्टोरी सेक्शन में लगाया है। शहनाज को जन्मदिन की शुभकामनाएं देने वालों में अली गोनी, माही विज, अवनीत कौर, एकता कपूर और सोफी चौधरी जैसे कई सेलिब्रिटीज शामिल रहे।

ये हैं अपकमिंग प्रोजेक्ट्स

शहनाज गिल के करियर फ्रंट की बात की जाए तो वह एक पंजाबी फिल्म 'इक कुडी' शूटिंग कर रही हैं। इससे जुड़ा अपडेट वह अपने इंस्टाग्राम पेज पर देती रही हैं। हाल ही में शहनाज ने रैपर सिंगर हनी सिंह के साथ भी एक म्यूजिक वीडियो किया है, इसे काफी पसंद किया गया है। शहनाज पंजाबी फिल्मों में एक्टिंग और सिंगिंग करती रही हैं। हिंदी फिल्मों में उनके लिए राह 'बिग बॉस 13' के कारण खुली थी। वह इस रियालिटी शो में बतौर प्रतियोगी शामिल हुई। यहां उनकी मुलाकात सिद्धार्थ शुक्ला से भी हुई। दोनों के बीच एक अलग तरह की केमिस्ट्री, कनेक्शन बन गया था। शो से बाहर आने के बाद भी दोनों साथ नजर आए। ऐसा कहा जाने लगा कि दोनों रिलेशनशिप में थे लेकिन 2021 में सिद्धार्थ शुक्ला का हार्ट अटैक से निधन हो गया। सिद्धार्थ के जाने के बाद शहनाज काफी समय तक सदमे में रही, इससे उबरने में एक्ट्रेस को बहुत समय लगा। अब शहनाज अपनी जिंदगी में आगे बढ़ रही हैं।

डांस में शाहिद कपूर को कौन सी अभिनेत्री दे सकती है टफ कंपटीशन बोले- बहुत अच्छी डांसर हैं...

शाहिद कपूर इन दिनों अपनी आगामी एक्शन फिल्म देवा को लेकर लगातार चर्चा में बने हुए हैं। शाहिद अभिनेता होने के साथ ही बेहतरीन डांसर भी हैं, जिसका उदाहरण उनकी कई फिल्मों में देखा जा सकता है। फिल्म देवा के टीजर में शाहिद का डांस हर किसी को पसंद आया। इसी फिल्म के प्रचार के दौरान जब शाहिद से पूछा गया कि वह कौन अभिनेत्री हैं, जो उन्हें डांस में टफ कंपटीशन दे सकती हैं। एक इंटरव्यू के दौरान जब शाहिद कपूर से पूछा गया कि उनके हिसाब से कौन सी ऐसी अभिनेत्री हैं, जो उन्हें डांस में टफ कंपटीशन दे सकती हैं। जब शाहिद की को-स्टार उनसे कहती कि थोड़ा कम डांस करा कर यार। तो इस पर शाहिद कहते थे कि वह डांस करना नहीं बंद कर सकते। कथित तौर पर शाहिद ने प्रियंका चोपड़ा का नाम लिया और उनकी तारीफ की और उन्हें बहुत अच्छी डांसर बताया। इसके बाद उन्होंने दीपिका पादुकोण, पूजा हेगड़े, कियारा आडवाणी और अमृता राव सहित कई अभिनेत्रियों के नाम बताए, जिनके साथ उन्होंने काम किया है।

कैटरीना से लेकर पूजा तक की तारीफ की

शाहिद कपूर ने कहा, वैसे तो बहुत सारी अभिनेत्रियां हैं, जो शानदार डांसर हैं। उनमें से कई के साथ मैं पहले भी काम कर चुका हूं। प्रियंका बहुत अच्छी डांसर हैं, दीपिका बहुत अच्छी डांसर हैं। मुझे फिल्म देवा में पूजा हेगड़े के साथ डांस करने में मजा आया। कियारा एक अच्छी डांसर हैं, लेकिन हमने साथ में डांस नहीं किया है। यहां तक कि अमृता भी अच्छी डांसर हैं, जब मैंने उनके साथ काम किया था। मैंने कैटरीना के साथ कभी कोई गाना नहीं किया है लेकिन वह एक शानदार डांसर हैं। शाहिद कपूर और प्रियंका चोपड़ा ने 2009 में फिल्मकमीने और 2012 में फिल्म तेरी मेरी कहानी में साथ काम किया है। वहीं, शाहिद और दीपिका नेपद्मावत में साथ काम किया है। कियारा आडवाणी और शाहिद नेकबीर सिंह में साथ काम किया है, जबकि उन्होंनेविवाह में अमृता राव के साथ काम किया है। अब शाहिद पूजा हेगड़े के साथ फिल्म देवा में नजर आएंगे।

करीना कपूर के बचाव में आईं ट्विंकल खन्ना, बोलीं-ऐसी बेवकूफी भरी अफवाहें...

सैफ अली खान पर हुए हमले के मामले पर अब बॉलीवुड सितारे भी खुलकर आए हैं। इस हमले पर अब ट्विंकल खन्ना ने भी बात की है। उन्होंने सैफ पर हुए हमले के बाद करीना कपूर खान पर हुई ट्रोलिंग को लेकर बात की है। ट्विंकल खन्ना ने लिखा, अपने कॉलम में करीना कपूर का बचाव किया है। उन्होंने बताया कि ऐसीबेवकूफी भरी अफवाहें हैं कि घटना के दौरान बेबो घर पर नहीं थीं या अपने पति की मदद करने के लिएबहुत ज्यादा नशे में थीं। ट्विंकल खन्ना ने कहा कि लोगों को बस पत्नियों पर दोष डालने पर मजा आता है। विराट कोहली और अनुष्का शर्मा के बारे में भी ट्विंकल खन्ना ने बात की है। उन्होंने कहा, जब विराट कोहली आउट होते हैं, तो अनुष्का को हूटिंग का सामना करना पड़ता है। ट्विंकल खन्ना ने कहा कि ये पैटर्न सिर्फ बॉलीवुड अभिनेत्रियों के लिए नहीं है। उन्होंने बताया कि पतियों के वजन बढ़ने या घटने के लिए पत्नियों को दोषी ठहराया जाता है। उन्होंने बताया कि कैसे लोग अपने साथी के स्वभाव और यहां तक किगंजेपन के लिए भी पत्नी को दोषी ठहराते हैं।

सांस्कृतिक जड़ों में हो रही मिक्सिंग, पीढ़ियों को क्या दे रहे संदेश

भारी पुलिस बल की मौजूदगी में हुआ सुहागलो का इवेंट

महिलाओं की आस्थाओं से जुड़ा है सुहागले

आयोजक गोटिया के पति के आमंत्रण पर गई थी प्रीति त्रिपाठी, अंजू ने कहा डंडे से पिटवाऊंगी

टीआई कह रहे घरेलू कार्यक्रम था, आयोजकों की व्हाट्सएप और सोशल मीडिया चैट्स की जांच कराएं, सामने आएगा सच

त्रिपुरी टाईम्स ● जबलपुर
www.tripuritimes.com

देश में इस समय सनातन संस्कृति और हिन्दुत्व की लहर दौड़ रही है। ऐसे में अनेक लोगों के अंदर कार्यक्रम करने की होड़ मची है। जिसमें राजनीतिक और व्यापारिक लाभ भी देखा जा रहा है। लेकिन कई आयोजन ऐसे भी हो रहे हैं, जो हमारी सनातनी मान्य परंपराओं के अनुरूप नहीं है।

जड़ों से जुड़ने का दौर

यह हमारी सांस्कृतिक जड़ों से जुड़ने का दौर है, ऐसे में मिक्सिंग कर अपने मन मुताबिक इवेंट इस समय हो रहे हैं, यह आयोजन पीढ़ियों को क्या संदेश देंगे। बर्थडे में मिक्सिंग, शादी विवाह में मिक्सिंग, तीज त्योहारों में मिक्सिंग और अब सुहागलों में मिक्सिंग, मिक्सिंग के दौर में हम नई संस्कृति को जन्म दे रहे हैं।

पश्चात्य की तरफ भागे थे, अब जड़ों की ओर

20वीं सदी में हमारी संस्कृति में इतनी मिक्सिंग कर परोसा गया कि हम पाश्चात्य की तरफ भागने लगे। 21वीं सदी में अब हम पुनः अपनी जड़ों की ओर जुड़ रहे हैं। इस दिशा में हिंदूवादी संगठन और वर्तमान सरकार प्रयास कर रही है। ऐसे में इस तरह के आयोजन हमारे सामूहिक प्रयासों में मट्ठा डालने का काम कर रहे हैं।

सुहागलों में काटा था केक

गौरतलब है कि विगत 24 नवंबर 2024 रविवार को खरे दिन एक होटल में इसी संस्था के द्वारा एक वृहद सुहागलों का कार्यक्रम आयोजित किया गया था। जिसमें माता रानी के नाम का केक भी काटा गया था।

धमकियों का दौर शुरू

यह कार्यक्रम सनातन की मान्य परंपराओं के अनुरूप नहीं था। जिससे कई महिलाओं की भावनाएं आहत हुई थी। उनमें से एक प्रीति त्रिपाठी ने सोशल मीडिया पर चल रहे विषय पर अपना पक्ष रखा था, जिसके बाद उसे धमकियां मिलने का दौर प्रारंभ हो गया।

त्रिपुरी टाइम्स
फॉलोअप

आयोजकों का खौफ

आयोजकों का खौफ इतना है कि महिलाएं बोलने को तैयार नहीं है। नाम न छापने की शर्त पर कुछ महिलाओं ने कहा कि आयोजकों के व्हाट्सएप एवं सोशल मीडिया के सभी अकाउंट चेक करा लीजिए आपको पता चल जाएगा कि इनका घरेलू आयोजन था कि यह इवेंट के रूप में था। विवाद बढ़ाने के बाद कुछ महिलाओं ने अपना शुल्क वापस मंगा जिन्हें नहीं मिला और डराया गया।

विधर्मियों ने जलाई गाड़ी

2 दिन पूर्व साध्वी आत्मनिष्ठता, शोभा तिवारी और प्रीति त्रिपाठी के साथ कुछ महिलाओं ने कलेक्टर को शहर में हो रही मान्य परंपराओं के अनुरूपन हीं होने वाली सुहागलों को रोके जाने की मांग की थी। गुरुवार शुक्रवार की दरमियानी रात लगभग 1:00 बजे साध्वी आत्म निष्ठ की गाड़ी विधर्मियों ने जला दी। कार्यक्रम के विरोध करने का परिणाम था ?

आयोजक के पति गोतिया ने किया था आमंत्रित

आयोजक श्वेता दुबे गोटिया के पति राम गोटिया ने गुरुवार को प्रीति त्रिपाठी को फोन कर कार्यक्रम में आमंत्रित किया था। उन्होंने कहा था कि मेरे 50 हजार रुपए से अधिक खर्च हो गए हैं। यह आयोजन हो जाने दो, इसके बाद हम बात करेंगे, फिर इस तरह के आयोजन नहीं होंगे।

डंडे से पिटवाऊंगी

शुक्रवार को डरी हुई प्रीति त्रिपाठी साध्वी आत्मनिष्ठता और कुछ महिलाओं के साथ आयोजन में शामिल होने गई तो, गेट पर भारी पुलिस बल तैनात था, बाउंसर तैनात थे, वहां अंजू भार्गव ने गेट पर आकर हमारा विरोध किया। प्रीति त्रिपाठी ने बताया कि पुलिस प्रशासन और मीडिया की मौजूदगी में अंजू भार्गव ने मुझसे कहा कि तुझको मैं डंडे से पटवा आऊंगी।

विजय नगर थाने में की शिकायत

इस घटना के बाद प्रीति त्रिपाठी महिलाओं के साथ विजय नगर थाने पहुंची। थाना प्रभारी को 24 नवंबर 2024 को हुई सुहागलों के बाद से अब तक का घटनाक्रम बताया और लिखित रूप से शिकायत दी कि मुझे अंजू भार्गव ने डंडे से पिटवाने की धमकी दी है। आज के बाद मुझे और मेरे परिवार के किसी भी सदस्य को कुछ होता है किसी तरह का हम पर आक्रमण होता है तो उसकी सारी जवाबदारी अंजू भार्गव की होगी उसके खिलाफ कार्रवाई की जाए।

घरेलू कार्यक्रम था

गुरुवार रात को त्रिपुरी टाइम्स को विजय नगर थाना प्रभारी वीरेंद्र पवार ने जानकारी दी थी कि किसी सामूहिक सुहागलो के आयोजन की अनुमति नहीं है। वहीं आज टीआई साहब का अंदाज ही बदल गया, संभवत कोई दबाव रहा होगा। टी ने कहा कि यह आयोजन घरेलू था प्रीति त्रिपाठी को धमकी की शिकायत मिली है जांच कर कार्रवाई करेंगे।

सुहागिनों का इवेंट नहीं होना चाहिए

वही विगत दिनों मचे बवाल के बाद महामंडलेश्वर स्वामी अखिलेश्वरानंद गिरि ने त्रिपुरी टाइम्स को बताया कि हमारे सनातन धर्म में धर्मशास्त्रों में पर्वों का विस्तृत वर्णन है और परंपराओं की आचार संहिता भी है। किसी भी पर्व में मुहूर्त, तिथि, नक्षत्र और दिन का बड़ा महत्व होता है। पर्वों को मनाने के पीछे लोकाचार की परंपरा और सुविचार होते हैं। अधिकांश कथानक में देवी-देवता विशेष रूप से भगवान विष्णु और माता लक्ष्मी की पूजा की जाती है। सुहागले, सुहागन स्त्रियों के द्वारा मानाया जाने वाला लोकाचार पर्व है। इसमें सुहागन बहनों को सुहाग की सामग्री भेंट करने की परंपरा है। इसकी अपनी पूजा-पाठ और पद्यति है। होटल या सार्वजनिक स्थान पर नहीं किया जाना चाहिए। बात सुनने में आई है कि लोग इवेंट की तरह सुहागले, रजिस्ट्रेशन करा कर, शुल्क लेकर कर रहे हैं। यह तो बिल्कुल भी नहीं होना चाहिए। यह तो व्यापार का स्वरूप है।

मेरी तो गाड़ी ही जला दी गई

वही साध्वी आत्मनिष्ठता ने बताया कि सुहागले बहनों की पनौती होती है। वह बगैर कोई शुल्क लिए अपने समर्थन अनुसार करती हैं। किसी होटल या पार्क में नहीं होता। घर में या मंदिर में किया जाता है। इवेंट के रूप में सुहागलों की जानकारी मिली थी, हम कलेक्टर साहब के पास गए थे। कलेक्टर साहब ने कहा कि आप धार्मिक क्षेत्र में काम कर रहे हैं आप भी उन्हें समझाइए। हम तो यहां बात करने आए थे, लेकिन हमको बात करने का अवसर ही नहीं दिया। अंजू भार्गव ने ही चिल्ला-चिल्ला कर बात करके वातावरण दूषित किया। मुझे तो इसका परिणाम भी भुगतना पड़ा क्योंकि जिस दिन हमने कलेक्टर को ज्ञापन दिया। उसके दूसरे दिन ही हमारी गाड़ी रात में 1:00 बजे के आसपास जला दी गई। क्योंकि मुझे आज इस कार्यक्रम में आना था।

परंपराओं के खिलाफ आयोजन का विरोध करेंगे

परंपराओं के खिलाफ आयोजन होंगे तो विरोध करेंगे हिंदू धर्म सेना के प्रदेश संयोजक अर्पित सिंह ठाकुर ने त्रिपुरी टाइम्स को बताया कि सुहागले या अन्य कोई कार्यक्रम जो सनातन हिंदू परंपराओं के अनुरूप नहीं होंगे उन सभी कार्यक्रमों का हम विरोध करेंगे।

चंदे से होते हैं सामूहिक कार्यक्रम

वही पत्रकारों से चर्चा करते हुए कार्यक्रम के मुख्य अतिथि अंजू भार्गव ने कहा कि सामूहिक कार्यक्रम चंदा करके ही होते हैं। जानकारी मिली है कि ?300 महिलाओं से लिए गए हैं। यहां सभी आयोजक हैं। मै यहां मुख्य अतिथि के रूप मे आई हूं। यहां जो महिलाएं आई हैं, इनके कारण हम सभी की भावनाएं आहत हुई है।

पुलिस बल की मौजूदगी में हुआ आयोजन

शुक्रवार को विजय नगर स्थित विकास नगर पार्क में भारी पुलिस बल की मौजूदगी में सामूहिक सुहागलों का आयोजन एक पल जन सेवा समिति की श्वेता दुबे गोटिया एवं शिल्पा तिवारी के नेतृत्व में इवेंट के रूप में आयोजित किया गया। इवेंट इसलिए कहां जा रहा है कि बाकायदा प्रचार प्रसार कर लोगों से रजिस्ट्रेशन करा कर शुल्क 350 रुपए लिया गया था। जबकि सुहागलें जो महिला आयोजित करती है वह अपने घर में मंदिर में अपनी समर्थ अनुसार महिलाओं को आमंत्रित करती है जिसका कोई शुल्क नहीं लेती।

पुलिस की बड़ी कार्रवाई, तस्करों से चल रही पूछताछ

5 लाख रुपए की स्मैक के साथ 2 पेडलर गिरफ्तार

त्रिपुरी टाईम्स ● जबलपुर
www.tripuritimes.com

क्राइम ब्रांच सहित अधारताल पुलिस ने संयुक्त कार्रवाई करते हुए अधारताल तालाब के पास से 2 स्मैक तस्करों को गिरफ्तार किया है। तस्करों के पास से मिली शुद्ध स्मैक की अंतराष्ट्रीय बाजार में कीमत 5 लाख रुपए के आसपास बताई जा रही है। तौल कराने में स्मैक का कुल वजन 30 ग्राम के आसपास होना बताया जा रहा है। अधारताल पुलिस ने बताया कि स्मैक के साथ गुलशेर उर्फ गोल्डी खान निवासी हनुमानताल और करामत अली निवासी मोती नाला के पास को गिरफ्तार किया गया है। नशा तस्करों को पकड़ने में एएसआई नरेश पासी, राजेश पांडे, रूस्तम अली और अखिलेश पांडे की सराहनीय भूमिका रही है।

महंगा नशा पूरा करने अपराध कर रहे नशेड़ी

स्मैक का नशा युवाओं के दिलो दिमाग पर इस कदर छा जाता है कि 15 दिन में ये इसके आदी हो जाते हैं, इसकी तलब मिटाने के लिए स्मैकची को जैसे-तैसे स्मैक का जुगाड़ करना पडता है। स्मैक नहीं मिलने पर युवाओं में गुस्सा होना, झगड़ा करना इत्यादि आदतें सामान्य हो जाती है। ऐसे में महंगे नशे का शौक पूरा करने के लिए कई युवा अपराध की राह चुन रहे हैं। कॉलेज में पढ़ रहे कई छात्र नशेडियों के चंगुल में फंस जाते हैं। शुरू में इन्हें शौक के लिए स्मैक का नशा कराया जाता है। बाद में यह नशा छात्रों और बेरोजगारों के जेहन में इतना उतर जाता है और वह इसके आदी हो जाते हैं।

स्मैक में मिला रहे है नशीली दवा

जानकारी अनुसार स्मैक की खेप पहुंचने के बाद कारोबारी अधिक मुनाफा कमाने के लालच में इसमें नशीली दवाइयों का मिश्रण करते हैं। 10 ग्राम शुद्ध स्मैक में 4 से 5 ग्राम पॉवर नामक पाउडर नशा और नींद की गोलियां का मिश्रण करते हुए मात्रा में बढोतरी कर कमाई कर रहे हैं। स्मैक के फलफूल रहे कारोबार पर शहर में ऐसे कई मुख्य स्थल है, जहां यह आसानी से उपलब्ध हो जाती है। स्मैक कारोबारियों की सफेदपोश सहित कुछ पुलिसकर्मियों के साथ सांठगांठ के चलते नशा कारोबार धड़ल्ले से चल रहा है।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक डॉ. राजेश जायसवाल के लिए, एन.एम. पब्लिकेशन प्रा. लि., उखरी चौक, एम.आर.-4 रोड, जबलपुर (म.प्र.) से मुद्रित और कल्चुरी भवन हाउस नं. 3367/1, विवेक नगर, आधारताल, जबलपुर (म.प्र.) से प्रकाशित ।
संपादक : डॉ.राजेश जायसवाल* सभी विवादों का न्याय क्षेत्र जबलपुर रहेगा *पीआरबी एक्ट के तहत समाचार चयन के जिम्मेदार। आरएनआई नं. MPHIN/2014/60079 मो. 9425154229, फोन-0761-4085321 e-mail: tripuritimes@gmail.com